बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-118 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | फरवरी 2024 | मूल्य - 5 रूपए

विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी सड़क एवं कामकाजी बच्चों के हौसले बुलंद, साझा किये अपने सपने

रिपोर्टर सरिता, हंसराज, काजल, किशन

सड़क पर रह रहे सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपनी बाल्यावस्था से ही विभिन्न प्रकार के कामकाज में लिप्त होते है। आप अपनी गलियों में, सड़कों पर व झुग्गी बस्तियों में नजर डालेंगे तो हर एक स्थान पर ये बच्चे तरह-तरह के कामकाज में संलग्न दिखाई देंगे यद्यपि उनके भी कई सपने होते हैं और वह अपने सपनों को साकार करने के लिए अनेक प्रकार की कठिन परिस्थितियों से गुजर रहे होते हैं। इसी क्रम में बालकनामा के पत्रकारों ने अलग-अलग स्थान पर जाकर सड़क एवं कामकाजी बच्चों से उनके सपने जानने का प्रयास किया जिसके अंतर्गत अलग-अलग स्थानों के बच्चों ने अपने सपने पत्रकारों से साझा किये।

इसी प्रकार बच्चों ने अपने सपने साझा करते हुए कहा की मेरा नाम अमन (परिवर्तित नाम) है, मैं 13 वर्ष का हूँ और मैं बंगाल का रहने वाले हूँ। बंगाल में हमारा अपना खुद का घर नहीं है, घर के पारिवारिक आपसी लड़ाई-झगड़े के कारण हम अलग होकर अपने माता-पिता के साथ गुड़गांव स्थित झुग्गी में रहते हैं। मेरी माता जी आसपास की कोठियों में पोछा लगाने का काम करती हैं और पिताजी मूंगफली का ठेला लगाते हैं, मैं मेरे घर में सबसे बड़ा हूँ, हम तीन बहन-भाई हैं जिसमें दो बहन एक भाई है इसी कारण मुझे अपने पिता जी की मूंगफली का ठेला लगाने में मदद करनी पड़ती है साथ ही मैं शिक्षा प्राप्त करने के लिए रोजाना स्कूल भी जाता हूँ। मैं सुबह 8:00 बजे से स्कूल चला जाता हूँ और दोपहर में 3:00 बजे स्कूल से लौट कर आता हूँ तत्पश्चात खाना खाकर और शाला गणवेश बदलकर फिर मैं 4:00 बजे ठेले पर पिताजी के पास उनकी मदद करने के लिए जाता हूँ और वहां पर बैठकर मूंगफली बेचता हूँ। मैं बड़े होकर डॉक्टर बनना चाहता हूँ, मेरी माता जी का स्वास्थ्य हमेशा खराब रहता है और पिताजी भी अधिक आयु होने के कारण ज्यादा काम नहीं कर पाते है साथ ही माताजी भी अधिक काम नहीं कर पाती है। पिताजी जितना पैसा ठेले के द्वारा कमाते हैं उतने से अधिक पैसा माताजी के स्वास्थ्य में लग जाता है इसीलिए मैं बड़े होकर डॉक्टर बनना चाहता हूँ ताकि मैं अपने घर में अपने माता-पिता का ध्यान और उनको स्वस्थ रख सकूँ और साथ ही साथ देश की सेवा कर पाऊं।

दिल्ली की शकूर बस्ती में रह रहे रामू से बात की तो रामू ने बताया की मैं वर्तमान में 9 वर्ष का हूँ और मैं अपने माता-पिता के साथ बस्ती में ही रहता हूँ। मैं रोजाना विद्यालय भी जाता हूँ और वर्तमान में मैं कक्षा 6 में पढता हूँ, हमारे घर में सभी कबाड़ा बीनने और छाँटने का काम करते हैं। पिताजी रोजाना सुबह दूर-दूर कबाड़ा बीनने के लिए निकल जाते हैं और माता जी एवं छोटे बहन-भाई घर पर ही कबाड़ा छाँटने का काम करते

हैं। मैं और मेरे छोटे बहन-भाई, हम पहले सुबह स्कूल जाते हैं और वहां से आने के बाद थोड़ा सा आराम करके फिर पिताजी को फोन करते हैं और वह हमें बताते कि हम इस स्थान पर हैं तो फिर हम वहां पर जाकर पिताजी के साथ कबाड़ा की रेहडी लेकर आते हैं, कभी-कभी ऐसा भी होता है कि काम करने के कारण पढ़ाई के लिए समय भी नहीं मिल पाता है तब रात में जाकर मैं समय निकाल कर पढ़ाई करता हूं मेरा सपना है की मैं बड़ा होकर एक पुलिस ऑफिसर बनना चाहता हूँ।

नोएडा में रह रहे मनीष (परिवर्तित नाम) से बात करने के दौरान मनीष ने अपनी कठिन परिस्थितियों से गुजरने की बातें करते हुए अपने सपने के बारे में बताया की मैं 16 वर्ष का हूँ और हम किराए के कमरे में रहते हैं। हम पांच बहन-भाई हैं दो भाई और चार बहन, एक बहन बड़ी है और जिसकी शादी हो गई है और बाकी हम छोटे हैं, कहते हैं पिता का होना एक बहुत बड़ा सहारा होता है पर मेरे पिताजी की मृत्यु हो चुकी है। जब हमारे पिताजी थे तो हमें काम नहीं करना पड़ता था, पर जब से पिताजी गए हैं तब से घर में आर्थिक स्थिति काफी बिगड़ गई है। पिताजी के जाने के बाद कई-कई बार ऐसा भी हुआ है कि घर में पर्याप्त भोजन ना होने के कारण भूखे रहने की नौबत आ गई, मैं वर्तमान में पानी सप्लाई का काम करता हूँ और सुबह से काम करने के लिए चला जाता हूँ और रात 9:00 बजे के आस-पास घर पर लौट कर आता हूँ। अपने कार्य के अंतर्गत मैं घर-घर जाकर पीने वाला पानी की सप्लाई करता हूँ और इस काम के मुझे महीने के 9000 रुपए मिलते हैं जिससे मैं घर का खर्च चलाता हूँ। पत्रकारों ने बच्चों से पूछा कि आप भविष्य में क्या बनना चाहते हो? तो बालक ने बताते हुए कहा कि जब मेरे पिताजी ही नहीं है तो मैं कुछ सोचता भी नहीं हूँ की मैं क्या बनना चाहता हूँ क्योंकि जब पिताजी गुजर गए तो मेरी पढ़ाई भी छूट गई और अब वर्तमान में सिर्फ मैं कामकाज पर ही ध्यान दे रहा हूँ। मेरा बस यही सपना है कि मैं बड़ा होकर अपने घर की स्थिति सुधार सकूँ और किसी के आगे हाथ ना फैलाना पड़े और ऐसी भी नौबत ना आए कि घर में एक समय का भोजन ना हो। जयपुर में रहने वाली मीनाक्षी (परिवर्तित नाम) ने बताया की लगभग 6 वर्ष पहले वो कोटा के किसी गांव में रहा करते थे वहां पर कोठी में रोजाना कामकाज करने के लिए जाती थी। जिस कोठी में मैं कामकाज करने के लिए जाती थी वह कोठी का मालिक आईएएस अधिकारी था और मैं उनके बच्चों की देखभाल करती थी उनकी खुशी को देखकर मुझे काफी खुशी होती थी। मैं वहां पर उन बच्चों के साथ में खुद भी पढ़ाई करती थी और मैंने भी सोचा था कि मैं भी बड़ी होकर आईएएस अधिकारी बनूंगी। मैं वर्तमान में रोजाना स्कूल भी जाती हूँ, स्कूल से आने के बाद फिर कामकाज पर जाती हूँ।

नोएडा में रहने वाली 14 वर्ष बालिका से बात की तो बालिका ने बताया की मैं वर्तमान में नोएडा सेक्टर 49 में अपनी भाभी के पास रहती हूँ मेरे घर में वर्तमान में चार सदस्य हैं दो बहन भाई और माताजी एवं भाभी हम अपने भैया-भाभी के साथ किराए के कमरे में रहते हैं और मुझे घर का पूरे दिन घरेलू कामकाज करना पड़ता है। भैया माता जी के पास नहीं रहने देते, माताजी अलग झुग्गी में रहती है और भाभी कुछ कामकाज नहीं करती है बल्कि सारा कामकाज हमें ही करने के लिए कहती है। माताजी को आंख से दिखाई नहीं देता और इस कारण भैया माताजी का साथ नहीं देते, हालाँकि यह सब देखकर मुझे काफी बुरा लगता है। यदि मैं कुछ कहती हूँ तो भैया हमारे कुछ नहीं सुनते और हमसे गाली-गलौच करते और मारते भी है। मैं पहले स्कूल जाया करती थी पर अब वर्तमान में स्कूल नहीं जाती, मैंने आठवीं कक्षा तक पढ़ाई की परन्तु अभी 2 वर्ष से छोड़ रखी है फिर भी मेरा सपना है कि मैं बड़े होकर शिक्षक बनना चाहती हूँ। कई परिस्थितियों से गुजरने के बाद भी सड़क एवं कामकाजी बच्चों के हौसले जुड़े हुए हैं वह हर परिस्थितियों से गुजरने के बाद भी अपने सपनों को पूरा करना चाहते हैं। ऐसे ही जयपुर की कच्ची बस्ती में 13 वर्षीय वीर (परिवर्तित नाम) से बात की तो वीर ने अपनी कहानी के बारे में बताया की इस स्थान पर अधिकतर बच्चे और आसपास के लोग पुराने कपड़े खरीदने और उसके द्वारा उन्हें बर्तन देते हैं यह कार्य अधिकतर होता है। मेरे पिताजी की मृत्यु हो चुकी है और माताजी हमें छोड़कर जा चुकी है, वर्तमान में हम अपनी दादी और चाचा के पास किराए के कमरे में रहते हैं। दादी रोजाना बर्तनों की फेरी लगाने के लिए जाती है और उनके द्वारा पुराने कपड़े खरीदती है, मैं भी रोजाना जो कामकाज मिल जाए

शेष पृष्ठ 2 पर

मौका देख ठेकेदार ने बढ़ाया झुग्गियों का किराया, बच्चों और परिवारों की समस्या बढ़ी

ब्यूरो रिपोर्ट

गुड़गांव स्थित दो सौ झुग्गियों पर बालकनामा पत्रकारों द्वारा अपने भ्रमण के दौरान कई स्थानीय बच्चों से बात करके उनकी परेशानियों को जानने का प्रयास किया गया तो बच्चों ने अपनी परेशानियों के बारे में बताते हुए कहा की जैसा सबको पता ही है कि कुछ महीने पहले गुड़गांव में लड़ाई दंगे हुए थे जिसके कारण गुड़गांव के लोग बाहर अर्थात किसी दूसरे राज्य के लोगों को रहने के लिए यहाँ मना कर रहे थे जिस कारण अधिकांश लोगों को अपने पैतृक गांव जाना पड़ा और इतनी जल्दी-जल्दी यहाँ से अपने घर एवं झुग्गी बस्ती खाली करनी पड़ी। इस हड़बड़ी में कुछ लोग तो बस्ती से पलायन कर गए परन्तु अधिकांश लोग नहीं गए बल्कि जहां पर लड़ाई दंगे हुए थे वहां से 10-20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित अन्य झुग्गियां में जाकर रहने लगे परन्तु वहां पर भी परेशानीयों ने हमारा दामन नहीं छोड़ा। जब हम उस झुग्गी बस्ती में रहने के लिए गए तो वहां पर ठेकेदार जहाँ पहले लोगों से 2000 रुपए प्रतिमाह झुग्गी का किराया लिया करता था। परन्तु अब, जब लड़ाई दंगे के कारण अधिकतर लोग उस झुग्गी बस्ती में रहने के लिए पहुंचे तो उसे ठेकेदार ने 2500 रुपए प्रतिमाह झुग्गी का किराया कर दिया पर विडंबना तो ये थी की अचानक किराया बढ़ाने के बाद भी उस समय काफी समस्या आ रही थी बस्ती में कोई किराए पर झुग्गी देने के लिए राजी नहीं था। जिस कारण हमें मजबूरी में उसे झुग्गी बस्ती में अधिक पैसे देकर रहना पड़ा। दिक्कते यहीं समाप्त नहीं हुई हमने देखा की इस झुग्गी बस्ती में शौचालय की कोई सुविधा नहीं थी बल्कि शौच के लिए अधिकतर लोग बाहर ही जाते थे हालाँकि वहां पर कुछ एक झुग्गियां में शौचालय बने हुए थे पर वह झुग्गी बस्ती के लोगों हथियाए हुए थे इस विषय पर ठेकेदार को हमने कई बार बोला परन्तु उन्होने इसे अनसुना कर दिया।

सर्दियां बनी झुग्गी निवासियों के लिए कहर, बच्चे हो रहे बीमारियों के शिकार

बातूनी रिपोर्टर - अंजली, बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

पिछले कुछ दिनों में मौसम के बदलने से दिल्ली सहित पूरा उत्तर भारत शीतलहर की चपेट में है। इन दिनों दिल्ली में पड़ रही भीषण सर्दी ने लोगों का जीना दुशवार कर रखा है। ऐसे में जिन लोगों को सबसे ज्यादा दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है, वे हैं गरीब मजदूर और उनका परिवार, जिनके पास न तो रहने के लिए ठीक से छत हैं, और ना ही इस कड़कड़ाती ठंड से बचने के लिए गर्म कपड़े या कोई दूसरा साधन। वे टीन, तिरपाल से बनी अस्थाई झुग्गी में रहते है जहां ठिठुरती सर्दी से बचने का कोई इंतजाम नहीं है। सर्दी का आलम यह है कि पक्के मकानों में रहने वाले लोग बिस्तर में कांप रहे हैं तो झुग्गी-झोपड़ी में रहने वालों की क्या हालत होगी? इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। भीषण ठंड से स्कूली छात्र ज्यादा प्रभावित हो रहे है क्योंकि उन्हें स्कूल जाने में दिक्कतें आ रहीं है। ज्यादातर बच्चे तापमान गिरने की वजह से जुकाम, बुखार व अन्य प्रकार की बीमारियों की चपेट में आ रहे है। जब बालकनामा रिपोर्ट हंस कुमार पश्चिम दिल्ली के शिवाजी पार्क में दौरा करने गए तो उन्हें वहां की बातूनी रिपोर्टर अंजली ने बताया की उसके इलाके की नौ वर्षीय बालिका संजना (परिवर्तित नाम) झोपड़ी में रहती हैं। ठंड से बचाव के लिए गरम कपड़े के नाम पर उसके पास एक कंबल है इसके अलावा दूसरा कोई और साधन नहीं है। उसके पास स्कूल की एक ही गणवेश है, अतः ठंड बढ़ी तो अपनी झुग्गी के नीचे बैठी वह दूसरों को निहार रही थीं जिसमे ठंड से उसके हाथ-पांव कांप रहे थे। यही हाल रिहाना (परिवर्तित नाम) का है। वह

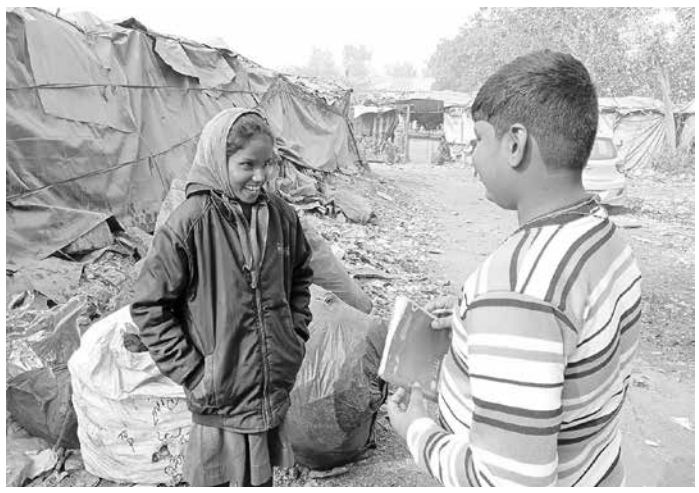

भी झुग्गी में रहती है ठंड से बचाव के लिए उसके परिवार के पास भी बेहतर इंतजाम नहीं है। उसने बताया कि ओस गिरने के बाद से नीचे की जमीन भी बर्फ जैसी लग रही है। ओढ़ने के लिए गर्म कपड़े पर्याप्त नहीं है, उसकी माता जी की भी ठंड लगने के कारण तबियत खराब है और उसके छोटे पांच भाई-बहन है जिनकी देखभाल करने के लिए उसे घर पर ही रहना पड़ रहा है और वो स्कूल नहीं जा पा रही। एक और बच्चे अमित (परिवर्तित नाम) ने बताया की उसके स्कूल के जूते फट गए है जिस कारण उसे पांव में ठंड लगती है और उसके परिवार की आर्थिक स्थिति फिलहाल उतनी अच्छी नहीं है वे उसे नए जूते खरीदकर दें, इस वजह से वो स्कूल नहीं जा पा रहा है और उसकी पढ़ाई का नुकसान हो रहा है। ज्यादातर बच्चो के माता पिता ठंड व घने कोहरे के कारण काम पर नहीं जा पा रहे या उन्हें काम नहीं मिल रहा जिस वजह से उनके परिवारों को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ रहा है। वे अपने बच्चो के लिए दो वक्त का खाना भी बहुत मुश्किल से जुटा पा रहे और और मूलभूत सुविधाएं मुहैया करवाने में असमर्थ है।

बच्चों ने सर्कस-तमाशे दिखाने के साथ-साथ पकड़ा शिक्षा का दामन

बातूनी रिपोर्टर खुशबू , रिपोर्टर राज किशोर

कई परेशानियों के बाद सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपने सपने पूरे कर पाते हैं वे बच्चे इतनी मेहनत करते हैं कि मेहनत करने में वह खून पसीना एक कर देते हैं। जब बालकनामा के पत्रकार गुड़गांव में रह रही एक 10 वर्ष बालिका से मिले तो बालिका ने बताया कि हम वर्तमान में स्कूल नहीं जाया करती हैं बल्कि हम रोजाना सड़कों पर बाजारों में, गली मोहल्ले में सर्कस एवं तमाशा आदि दिखाने के लिए अपने माता-पिता के साथ जाया करते हैं। हम सुबह से ही खेल-तमाशा दिखाने के लिए निकल जाते हैं जिसमे हम साइकिल का पहिया रस्सी पर चलाकर या उस पर बैठकर हम स्वयं तमाशा दिखाते हैं इसके अलावा रस्सी पर चलकर, सर पर लौटा रखकर तमाशा दिखाते हैं। ऐसे ही कई तरह से लोगों को खुश करके हम तमाशा दिखाते हैं। पत्रकारों ने जब बालिका से यह जाना की क्या आपको पढ़ना अच्छा लगता है? तो बालिका ने बताया की मैं हिंदी किताब पढ़ने में काफी माहिर हूँ। मुझे पढ़ना काफी अच्छा लगता है पर समस्या यह आती है कि हम सुबह से कामकाज पर निकल जाते हैं और इस कारण हम पढ़ने के लिए नहीं जा पाते हैं तो पत्रकारों ने बालिका को समझाते हुए कहा कि जब हमें अपनी जीवन में आगे बढ़ना होता है तो हमें परेशानियों का सामना करना पड़ता ही है फिर आगे पत्रकार ने पूछा की क्या आप अपने पढ़ने के लिए समय नहीं निकाल सकते हो? तो बालिका ने बोला कि मैं कोशिश कर सकती हूँ, तत्पश्चात बालिका ने अपने घर वालों से बात करके पत्रकार को बताया कि हां मैं पढ़ने के लिए जा सकती हूँ एवं समय निकाल सकती हूँ तो पत्रकारों ने चेतना संस्था के चल रहे एजुकेशन क्लब की जानकारी दी और फिर बालिका को एजुकेशन क्लब में होने वाले कार्य और विस्तार से बताया। इस प्रकार बालिका वर्तमान में काफी खुश है अब वह रोजाना एजुकेशन क्लब पर पढ़ने के लिए आती है।

विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी सड़क एवं कामकाजी बच्चों के हौसले बुलंद

पृष्ठ 1 का शेष

वह कामकाज के लिए चला जाता हूँ जैसे शादी-बारात में लाइट उठाने का काम मिल जाए या यदि कोई काम नहीं मिलता तो फिर मैं भी दादी के साथ बर्तन की फेरी लगाने के लिए चला जाता हूँ। मेरा भी पढ़ने का सपना है की मैं भी कुछ बड़ा होकर बनना चाहता हूँ पर मैं कभी स्कूल नहीं गया, जब मैं चेतना संस्था के कार्यकताओं से मिला तो मुझे उन्होंने बढ़ते कदम संगठन से जोड़ा और मुझे शिक्षा से जोड़ने के बारे में समझाया और मैं काफी खुश हुआ पर समस्या यह थी कि मेरे पास आधार कार्ड ही नहीं था। जब मैं चेतना संस्था से जुड़ा तो संस्था के कार्यकताओं ने हमारा आधार कार्ड बनवाया हालाँकि इसमें काफी चुनौतियां आई तब भी उन चुनौतियों का सामना किया और हाल ही में हमारा स्कूल में दाखिला हो गया है अब मैं पढ़ लिख कर एक पुलिस अधिकारी बनना चाहता हूँ।

अनुपयोगी चीजों का उपयोग कर बच्चों ने बनाए खिलौने

रिपोर्टर राज किशोर, बातूनी रिपोर्टर सुमित

सुमित (परिवर्तित नाम) जो कि 11 साल का लड़का है वह वजीराबाद झुग्गी में रहता है, सुमित क्योंकि गरीब घर से है इसलिए उसके घर वाले खेलने के लिए खिलौने नहीं दिला पाते हैं और सुमित भी घर के हालात देखकर घर वालों से खिलौनों की मांग नहीं करता है और मन मारकर रह जाता है। इसी क्रम में सुमित को एक दिन आईडिया आया क्यों ना वह खुद से खिलौने बनाये? तो उसने एक वेस्ट मटेरियल से एक ट्रैक्टर बनाया। जब हमने सुमित से पूछा कि उसे यह ट्रैक्टर बनाने का आइडिया कहां से आया और वह भी अनुपयोगी सामान से? तो सुमित ने कहा की मैं चेतना संस्था के सपनों की उड़ान कांटेक्ट पॉइंट पर पढ़ने के लिए आता हूँ हम सेंटर पर आर्ट एंड क्राफ्ट करते थे वहां से ही मुझे लगा की क्यों ना कुछ नया किया जाये, फिर मेरे पास खेलने के लिए पर्याप्त खिलौने भी नहीं हैं इसलिए मैंने खिलौने बनाने का अभ्यास किया और एक ट्रैक्टर बनाना शुरू किया। सुमित ने बताया कि मैंने जो यह ट्रैक्टर बनाया है उसके लिए मैंने माचिस की खाली डिब्बी ली है और फिर

मैंने फ्रूटी के खाली टेट्रा पैक से मिली पाइप ली उसे मैं ट्रैक्टर बनाने में उसे यूज किया और जो टायर मैंने बनाए हैं वह गेट को काटकर बनाये और फिर मैंने अपना वेस्ट मटेरियल से ट्रैक्टर बनाने का काम शुरू कर दिया। मुझे इसे बनाने में दो घंटे लगे और काफी मुश्किलें हुई तब भी मैंने हार नहीं मानी, आखिर में मैंने वेस्ट मटेरियल से अपना ट्रैक्टर बना दिया। सुमित ने बताया कि मैंने इसका नाम वेस्ट मटेरियल ट्रैक्टर रखा है अब इससे मैं और मेरे दोस्त खेलेंगेऔर मैं उन बच्चों को भी खिलौने बनाकर दूंगा जो खिलौने नहीं खरीद सकते हैं। वैसे सुमित को ट्रैक्टर पर बैठने का काफी शौक भी है और उसने अपना शौक पूरा करने के लिये ट्रैक्टर बनाया उसने अपने घर से माचिस की डब्बी ली और फिर पाइप आती है वह भी ली और फिर सुमित ने बताया कि मैंने अपने सेंटर से कलर लिया और फिर कलर लेकर घर पर आया और उसने अपना ट्रैक्टर बनाने का काम स्टार्ट कर दिया। जब वह ट्रैक्टर बनकर तैयार हो गया फिर मैंने उसे पर कलर किया। सुमित ने ये भी बताया कि कि वह बड़े होकर एक इंजीनियर बनना चाहता है ताकि आगे चलकर वह भविष्य में कुछ अच्छा करके दिखा सके और अपने माता-पिता का नाम रोशन कर सके।

अंधविश्वास के कारण बालिका का बचपन हो रहा प्रभावित

बालकनामा रिपोर्टरः काजल, बातूनी रिपोर्टरः अंशिका

हम सभी जानते हैं कि बच्चों का स्वभाव माता-पिता के लालन-पालन पर निर्भर करता है यदि अभिभावक ही अंधविश्वास को बढ़ावा दे तो बच्चों का बचपन प्रभावित होना सुनिश्चित हो जाता है । जब बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जामडोली कच्ची बस्ती का दौरा किया और बच्चों से बातचीत की तो बालिका रश्मि (परिवर्तित नाम) ने बताया की कि मेरे अंदर माताजी की छाया आती है इतना ही नहीं बालिका के घर के पास रहने वाली बातूनी रिपोर्टर अंशिका ने बताया की एक दिन रश्मि जिस घर में रहती है उस घर में अन्य किराएदारों से झगड़ा होने पर उसे बहुत

क्रोध आया था और वो जोर-जोर से चिल्लाने एवं घर के अंदर रखी पूजा की तलवार लाकर मारने लगी थी लेकिन वहां खड़े लोगों ने उसे पकड़ लिया। जब रिपोर्टर ने बालिका रश्मि से पूछा की तुम्हे कैसे पता चला की तुम्हारे अंदर माताजी की छाया आती है? तब बालिका ने बताया कि उसके माता-पिता उसे एक बाबा जी के पास लेकर जाते हैं तब से उसे ऐसा पता चला है।

बालिका के कोमल मन में अभी से इस तरह की बातों का घर कर जाना माता-पिता पर निर्भर करता है अब तो बालिका कई बार विद्यालय में भी जोर - जोर से रोने लगती है और अभिभावक यह कहकर ले आते है उसमे माता जी की छाया आती है।

बालकनामा रिपोर्टर के द्वारा बालिका की माता से बात की गई और उन्हें बताया गया कि ऐसा कुछ नहीं होता रश्मि को किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाएं और स्वयं भी ढोंगी बाबाओ के चुंगल से दूर रहने की कोशिश करें।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

स्कूल के बाद परिवार की जिम्मेदारियां संभालना, मासूम देर रात लौटता है घर

बातूनी रिपोर्टर-प्रिंस कुमार,
बालकनामा रिपोर्ट-हंस कुमार

पढ़ने-लिखने की उम्र में बच्चे घर का खर्चा चलाने के लिए कबाड़ उठाने, फैक्टरियों, दुकानों, रेस्टोरेंट आदि पर काम करने के लिए मजबूर हैं। बाल मजदूरी समाज के लिए एक अभिशाप है व बच्चों के अच्छे भविष्य के लिए इसका समूल नाश बहुत जरूरी है। ऐसा ही एक मामला सामने आया जब बालकनामा रिपोर्ट हंस कुमार शकूर बस्ती क्षेत्र में विजिट करने गए तो उन्हें वहां के बातूनी रिपोर्टर प्रिंस कुमार ने बताया कि चौदह वर्षीय लड़का जिसका नाम आदर्श कुमार (परिवर्तित नाम) है, वह आठवीं कक्षा का छात्र है। उसने बताया की वो एक कैंटीन में काम करता है जहां पर उसे पहले ट्रक पर सामान लोडिंग का काम करना पड़ता है जैसे बर्तन, खाना पकाने का समान, जूस, कोल्ड ड्रिंक एवम् चाय बनाने का सामान इत्यादि। उसका काम करने का कोई नियमित स्थान नहीं है अतः मालिक उसे जहां जाने को कहता है वह सामान से भरे ट्रक में बैठकर वहां चला जाता है। कभी नोएडा तो कभी गुड़गांव और वहां पहुंचकर ट्रक खाली करवाता है, फिर वो वहां वेटर के काम में लग जाता है और ग्राहकों को खाने-पीने की चीजे सर्व करता है। जब उससे पूछा गया कि वो इतना कठिन काम क्यों करता है तो उसने बताया की उसके घर में कुल चार सदस्य है जिसमे उसके माता-पिता एक बड़ा भाई और वो स्वयं। उसकी माता जी की अक्सर तबीयत खराब रहती है जिस वजह से वो कोई

काम नहीं कर पातीं, बड़ा भाई विकलांग है तो वो भी काम नहीं कर सकता और उसके पिता उम्रदराज है और दिन भर का पांच सौ से छह सौ रुपए ही कमा पाते है हालाँकि पहले वो ही अकेले घर का खर्चा चलाते थे पर उनकी अकेले की कमाई से घर चलाना बहुत कठिन था और बड़े भाई और मां की दवाइयां भी खरीदना मुश्किल हो रहा था। फिर एक दिन काफी सोच-विचार करने के बाद बालक ने भी पढ़ाई के साथ-साथ काम करना शुरू कर दिया। वो सुबह छह बजे उठ कर स्कूल जाने की तैयारी कर स्कूल जाता है, फिर वापस दो बजे घर लौटता है और एक घंटे के लिए चेतना एनजीओ के कॉन्टेक्ट क्लब में पढ़ने जाता है। वहां से वापस घर आकर वो रेलवे स्टेशन के पास से घर के लिए पानी लाता है और थोड़ी देर घर पर आराम करता है। फिर वो 6 बजे तक काम पर चला जाता है और वहां से देर रात दो बजे उसकी छुट्टी होती है। घर आकर वो केवल 3-4 घंटे ही सो पाता है। इतनी मशक्कत के बाद वो दिन के 650 रुपए कमा पाता है। इतनी मेहनत के बाद भी वो कभी स्कूल जाना नहीं छोड़ता और रोजाना स्कूल जाता है, वो पढ़ लिखकर अच्छा इंसान बनना चाहता है। बच्चों के कल्याण, समाज की प्रगति और राष्ट्र के विकास के लिए बाल श्रम को संबोधित करना और समाप्त करना महत्वपूर्ण है। बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा और उनके समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए सशक्त प्रयासों, व्यापक नीतियों और विभिन्न हितधारकों की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता है।

बच्चों को मिली मूलभूत जन सुविधाएं, बच्चे हुए खुश

बालकनामा रिपार्टरः काजल,
बातूनी रिपोर्टरः सुहाना

जयपुर की कई कच्ची बस्तियों में पानी, बिजली, सड़क और शौचालय इत्यादि मूलभूत समस्याओं से बच्चे बहुत ही परेशान है लेकिन जयपुर की प्रेम नगर कच्ची बस्ती में जब बालकनामा रिपोर्टर काजल ने दौरा किया और बच्चों से बातचीत की तब बालिका सुनैना (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हमारी बस्ती में पहले ना तो पानी का नल था, ना ही सड़क थी और सड़क न होने के कारण हमें बहुत परेशानी होती थी। बस्ती की गलियों में उबड़-खाबड़ जगह होने से और छोटे-बड़े कंकड़ होने से आए दिन हम बच्चों के चोट लग जाती थी और झुग्गी के बाहर ठीक से खेल भी नहीं पाते थे और पानी तो पैसे देकर खरीदना पड़ता ही था या फिर दूर लगे बोरिंग से भरके लाना पड़ता था। हालाँकि बस्ती के लोग स्थानीय पार्षद से अपनी समस्या कहते रहे लेकिन इतने सालो में किसी ने भी ध्यान नही दिया लेकिन इस बार तो चुनाव होने से पहले ही हमारी बस्ती में सड़क और पानी का नल लग गया हैं। अब हम बच्चों को परेशानी भी नही होती क्योंकि झुग्गी के बाहर ही सरकारी नल लगा है वहां से पाइप से पानी भर लेते हैं और सड़क पर भी चलना आसान हो गया हैं और शाम के वक्त हम सारे बच्चे सड़क पर टहलते भी हैं। अब तो सरकार हमारी बस्ती में अधूरे सरकारी शौचालय को भी सही करवा दे तो बहुत ही अच्छा काम हो जायेगा।

पिता की शराब की लत छूटी तो घर में खुशियां फिर से लौटी

बातूनी रिपोर्टर - गुलाब ,
बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार एन 86 लॉरिंस रोड़ का दौरा करने गए तो उन्हें वहां के बातूनी रिपोर्टर गुलाब ने बताया की उसके घर के पास 12 वर्षीय एक बालक रहता है जिसका नाम शुभम (परिवर्तित नाम) है। उसने दुखी होकर बताया की शराब ने उसके घर की खुशियां छीन ली थीं क्योंकि उसके पिता दिन भर काम करने के बाद शाम को अपनी मेहनत की कमाई शराब में उड़ा देते थे। वो उसकी मां से भी पैसे छीनकर शराब पर खर्च कर देते थे। घर जाते ही शोर-शराबे, मारपीट और गाली-गलौज से परिवार डरा-सहमा रहता था।

पूरे घर का माहौल किसी शराबखाने से कम नहीं था, उसके लिए वो समय किसी बड़ी त्रासदी से कम नहीं था अतः घुट-घुट कर जीना उनकी नियति बन गयी थी। उसके पिता की शराब के नशे में इधर-उधर सड़कों, नालियों और गलियों में गिर पड़ना दिनचर्या का हिस्सा थी और स्थिति ऐसी हो गई कि समाज उनसे कतराने लगा था। शराब पीने की आदत दिन-ब-दिन बढ़ती गई और इस प्रकार शराबी दोस्तों की संख्या भी बढ़ी परिणामतः सिर पर कर्ज का बोझ भी बढ़ने लगा।

परिवार की खराब आर्थिक स्थिति देखकर शुभम ने पास के ही नॉन वेज की दुकान पर हेल्पर का काम करना

शुरू कर दिया जिसके उसे महीने के तीन हजार रुपए ही मिलते थे। उसने थोड़े और पैसे कमाने के लिए वहां पर ग्राहकों को खाना सर्व करना भी शुरू कर दिया जिसके उसे बख्शीश के तौर पर दिन भर में तीन सौ रुपए मिल जाते थेअब पूरे घर के खर्च की जिम्मेदारी उसी पर थी। उसका एक बड़ा भाई भी है जो शादीशुदा है और गोवा में रहता है और समय-समय पर मिलने-जुलने आता-जाता रहता है लेकिन परिवार की कोई आर्थिक मदद नहीं करता।

एक दिन शुभम और उसकी मां को किसी शुभचिंतक ने सलाह दी की वो उसके पिता को नशा मुक्ति केंद्र ले जाए जिससे उनकी नशे की लत छूट सके। उसने ऐसा ही किया और कुछ समय बाद शुभम के पिता ने शराब पीना कम कर दिया और एक वक्त आया की वो पूर्ण रूप से शराब छोड़ने को तैयार हो गए। जैसे ही उन्होंने शराब छोड़ी, उन्हें घर की गरीबी का एहसास हुआ और इससे निपटने के लिए उन्होंने कड़ी मेहनत करना शुरू कर दिया और घर पर पैसे देना शुरू कर दिया, जिससे घर का माहौल बदलने लगा। घर में लड़ाई-झगड़े की जगह खुशियों ने ले ली। फिर उसने भी नॉन वेज शॉप पर काम करना बंद कर दिया और चेतना एनजीओ के सेंटर पर आकर पढ़ाई शुरू कर दी।

फिलहाल उसका दाखिला स्कूल में नहीं हुआ है हालाँकि नए सत्र का दाखिला आरंभ होते ही उसका भी दाखिला स्कूल में हो जाएगा।

रसोई गैस खरीदने के पैसे ना होने के कारण लकड़ी बीन कर लाना पड़ा भारी, बालक का टूटा हाथ

रिपोर्टर राज किशोर, बातूनी रिपोर्टर सोहेल

गुरुग्राम में जब सर्दी अपने जोर पर होती है तो ईंधन की खपत बढ़ ही जाती है ऐसी स्थिति में कुछ परिवार ऐसे भी होते है जो की महंगा रसोई गैस नहीं खरीद पाते है इसलिए वो अपने आसपास के क्षेत्रों से सूखी लकड़ी बीनकर लाते है और चूल्हे पर खाना बनाते है इसका दुष्परिणाम ये होता है की इस प्रकार चूल्हा जलने से बहुत धुआं निकलता है जो की स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होता है। बातूनी रिपोर्टर सोहेल ने बताया कि अभी कुछ समय पहले की ही बात है की पास में ही एक जंगल है जिसमें की कुछ बच्चे जंगलों में सूखी लकड़ी तोड़ने गये थे पर जब वे अपने घर लौटे तो बच्चों ने बताया कि मेरा एक दोस्त था जो कि पड़ोस में ही रहता था उसके मम्मी-पापा उसको जंगल में लकड़ी तोड़ने के लिए भेजा करते थे जिससे कि वह अपने घरों में लकड़ी से खाना बना सके। एक दिन जब वह बच्चा जंगल में लकड़ी तोड़ने के लिए गया तब वह बच्चा पेड़ पर चढ़कर लकड़ी तोड़ने के लिए जैसे ही चढ़ा और लकड़ी तोड़ने

की कोशिश किया तो वह बच्चा पेड़ से नीचे गिर गया जिसके कारण बच्चा लगभग 2 घंटे तक बेहोश पड़ा रहा फिर जब किसी व्यक्ति ने उसको देखा की कोई बच्चा जमीन पर पड़ा हुआ है तब वह व्यक्ति उस बच्चे को उसके घर लेकर गया तथा उसके माता-पिता से उसकी इस हालत के बारे में अवगत करवाया फिर जैसे-तैसे बालक को अस्पताल लेकर गए। डॉक्टर ने बताया कि उसे बच्चे का हाथ टूट गया है और डॉक्टर ने बताया कि वह दो घंटा इसलिए बेहोश था क्योंकि उसके सिर पर बहुत ही ज्यादा चोट लगी हुई थी इस वजह से वह बच्चा दो घंटे तक बेहोश पड़ा रहा बच्चों के माता-पिता ने डॉक्टर से पूछा कि यह कब तक ठीक हो जाएगा? तो डॉक्टर ने बताया कि बालक को कुछ दिन अभी हॉस्पिटल में ही एडमिट रहने दो जिससे कि यहां पर उसका अच्छी तरीके से इलाज हो सके।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

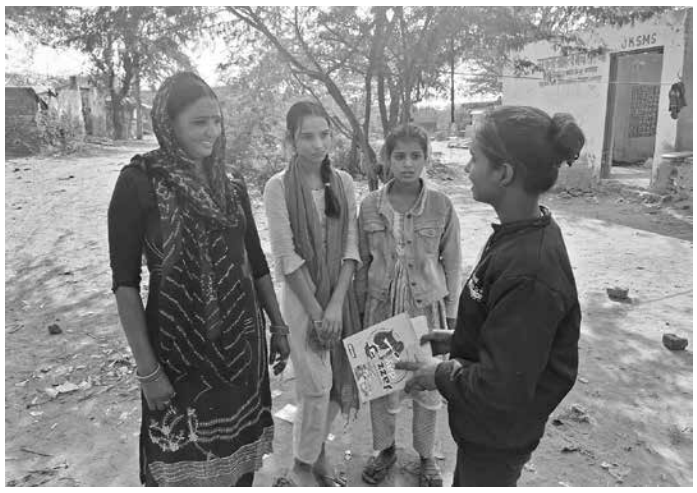

स्कूल में दाखिला पाकर खुशी से झूम उठी बालिका ईशा

बालकनामा रिपोर्टर काजल, बातूनी रिपोर्टर: ईशा

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जब जयपुर की बगराना कच्ची बस्ती का दौरा किया और बच्चों से उनकी समस्या और उनके अनुभव जानने का प्रयास किया तब बालिका ईशा (परिवर्तित नाम) ने बताया की मैं जब भी बच्चों को स्कूल जाते हुए देखती थी तो मेरा भी बहुत मन होता की काश मैं भी स्कूल जा पाती पर मेरा आधार कार्ड नही बनने के कारण लगता था की मैं कभी स्कूल नही जा पाऊँगी, मेरा ये सपना कभी पूरा नही हो सकेगा हालांकि मेरे माता-पिता ने ई- मित्र वाले को मेरा आधार कार्ड बनाने के लिए 2000 रुपए भी दिए लेकिन उसने पैसे लेने के कुछ दिनों बाद मना कर दिया की बालिका का जन्म प्रमाण - पत्र नही है इसलिए आधार कार्ड नही बनेगा और पैसे भी वापस नही दिए। मेरे माता - पिता अनपढ़ है पर वह मुझे पढ़ाना चाहते है लेकिन कोई रास्ता ही नही मिल रहा था लेकिन जब मैं चेतना संस्था के सेंटर से जुड़ी और चेतना संस्था के कार्यकर्ता ने मेरे माता-पिता को बताया और आधार कार्ड बनाने में हमारा सहयोग किया तो जैसे ही मेरा आधार कार्ड बनकर आया वैसे ही मेरा स्कूल में दाखिला भी हो गया। बालिका ने कहा की मुझे तो ऐसा लगता है जैसे जादू की छड़ी घुमाई गई हो जिससे मेरा आधार भी बन गया और स्कूल में दाखिला भी हो गया इसके लिए मैं चेतना संस्था को बार-बार धन्यवाद देती हूँ।

घर की पारिवारिक स्थिति खराब होने के कारण छूटा स्कूल

बातूनी रिपोर्टर सोनिया, रिपोर्टर किशन

गुड़गांव की झुग्गी बस्तियों में कई बच्चे अपने कामकाज में लगे रहते है इसी प्रकार एक झुग्गी बस्ती में एक बालिका अपने घर के घरेलू कामकाज में व्यस्त थी तभी हमारे बालकनामा रिपोर्टर ने बालिका से उसकी कहानी को जानने का प्रयास किया तो बालिका ने विस्तार से बताते हुए कहा की मेरा परिवर्तित नाम खुशबू है, मैं वर्तमान में गुड़गांव में अपने माता-पिता के साथ रहती हूं। मेरे घर में पांच सदस्य हैं जिसमे दो बहने एक भाई और माता-पिता है। पिताजी शटरिंग का काम करते हैं और माताजी भी पिताजी के साथ यही कामकाज करने के लिए जाती है। बालिका ने आगे बताया की गुड़गांव से पहले हम पंजाब में रहा करते थे जब हम गांव में रहा करते थे तो गांव में कामकाज नहीं था इस कारण हम पंजाब आ गए और पंजाब में 10 वर्ष से अधिक रहे और वहां काम काज करते रहे। पंजाब में आकर पिताजी ने हमारा स्कूल में दाखिला भी करवा दिया था और हम रोजाना स्कूल जाया करते थे। पिताजी को कामकाज करने के एक दिन के 1000 रुपए मिलते थे सब कुछ काफी अच्छे से चल रहा था परन्तु एक दिन अचानक से माता जी की तबीयत काफी खराब हो गई और जिसके कारण हमें जल्द से जल्द प्राइवेट हॉस्पिटल में दाखिला करवाना पड़ा पर दुर्भाग्य से हमारे पास इलाज करवाने के लिए अधिक पैसे नहीं थे जिस कारण पिताजी ने आसपास में रहने वाले लोगों से कर्जा ले लियाऔर माताजी के इलाज में पैसे लगा दिए, धीरे-धीरे माताजी बिल्कुल ठीक हो गई और अब वर्तमान में माताजी बिल्कुल स्वस्थ हैं। पर समस्या यह आने लगी की जिस जगह पिताजी कामकाज के लिए जाते थे उस जगह से काम काज बंद हो गया था और जब पिताजी दूसरी जगह कामकाज के लिए गए तो यहाँ पहले की अपेक्षा काफी कम मजदूरी पर काम मिला जिस कारण पिताजी ने उस स्थान पर काम नहीं किया और इस प्रकार पंजाब में हमारा गुजर-बसर सही से नहीं चलने के कारण हम लोग गुड़गांव आ गए। जब हम गुडगांव आए तो उस समय पंजाब में मैं कक्षा तीन में शिक्षा ले रही थी परन्तु वहां से पलायन होने के कारण पिताजी ने उस स्कूल से मेरा नाम कटवा दिया और हम गुड़गांव आ गए अब पिताजी इधर ही रोजाना कामकाज के लिए जाते हैं और माताजी भी पिताजी के साथ कामकाज पर जाती है। और मैं अब रोजाना घर पर रहकर घरेलू कामकाज और अपने छोटे बहन-भाइयों को संभालने का काम करती हूँ और समय निकालकर चेतना संस्था के एजुकेशन सेंटर पर रोजाना पढ़ने जाती हूँ।

घर में आर्थिक मदद करने के लिए जड़ी-बूटी बेचने को मजबूर सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर: आकाश,
बातूनी रिपोर्टर: अनुज

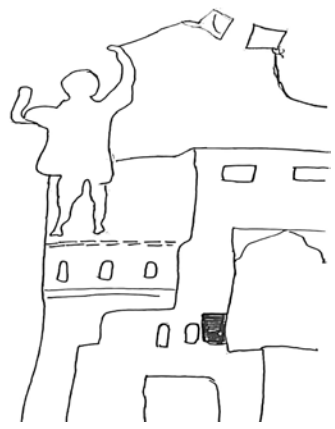

जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों में बहुत से बच्चों का बाल श्रम करना उनकी मजबूरी होती है ताकि वह घर में आर्थिक सहयोग कर सके इसी तरह जयसिंहपुरा कच्ची बस्ती के अधिकतर बच्चे मेलों में जड़ी-बूटी बेचने का कार्य कर रहे हैं। इसकी पूरी जानकारी जानने के लिए हमारे बालकनामा रिपोर्टर आकाश ने बच्चों से बात की तो बातूनी रिपोर्टर अनुज ने बताया कि बस्ती में लगभग 10 से 15 घरों के बच्चे अपने माता-पिता के साथ जयपुर से बाहर जड़ी -बूटी बेचने के लिए बस्ती से बाहर गए है तथा बालक कान्हा (परिवर्तित नाम) ने बताया की मैं भी लगभग दो महीने के बाद बस्ती में वापस आया हूँ, मैं अपने परिवार के साथ नाथद्वारा मेले में गया था और सड़क के किनारे ही माता-पिता से अलग दुकान लगाकर रोज औषधि बेचने का काम किया करता था। वहां लोगों को कमर दर्द, दांत दर्द, घुटना दर्द दूर करने की औषधि लेने के लिए जोर-जोर से आवाज देकर बुलाता और जिस दिन औषधि नहीं बिकती उस दिन हम भीख मांगते, इन दो महीनों में परिवार सहित लगभग 7 से 8 हजार की कमाई करने के बाद हम वापस बस्ती में आ गए। इसी तरह जयपुर और अन्य जगह (अमरनाथ, मानगढ़, खाटू श्याम जी, डिग्गी, वैष्णो देवी आदि) पर लगने वाले मेलों में हम जाते हैं और सड़क के किनारे रहते है और वही तिरपाल में विभिन्न तरीके की जड़ी बूटियां जमाकर बेचते हैं।

अभिभावकों को देखकर गलत आदतों के शिकार हो रहे हैं बच्चे, पड़ रही है जुआ खेलने की लत

बालकनामा रिपोर्टर: काजल,
बातूनी रिपोर्टर: मुस्कान

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जयपुर की जयसिंहपुरा बस्ती में दौरा किया और बस्ती के मुख्य रास्ते पर कुछ बड़े लोगों को ताश खेलते हुए देखा और उनके आस पास कुछ बच्चों को भी खड़े हुए देखा तो बालकनामा रिपोर्टर ने अन्य बच्चों से इस मुद्दे पर बातचीत की तो जानकारी मिली कि बस्ती में बहुत से बच्चों के अभिभावक ताश खेलते हैं और उन्हें ताश खेलते हुए देखकर अब तो बच्चे भी आपस में मंडली बनाकर ताश खेलने लगे हैं। इतना ही नहीं ताश खेलते समय बच्चे पैसों की हार-जीत की शर्तें भी लगाते हैं और यदि पैसे नहीं होते हैं तो मनपसंद चीजों की शर्त लगा लेते हैं जैसे चॉकलेट ,कोल्ड ड्रिंक, सुपारी इत्यादि। जब बालकनामा रिपोर्टर काजल ने बच्चों से पूछा कि इस खेल को लड़के ही खेलते हैं या लड़कियां भी खेलती हैं? तब बातूनी रिपोर्टर मुस्कान ने बताया कि कभी-कभी लड़कियां भी खेलती हैं, वैसे अधिकतर लड़के ही इसे खेलते हैं और इस खेल में बच्चे इतने लिप्त हो गए हैं कि वह विद्यालय से भी छुट्टी कर लेते हैं। इतना ही नही बच्चे जूआ खेलने के लिए घर में लड़ाई - झगड़ा तक कर लेते है, बालिका मुस्कान ने बताया की बस्ती में कबीर (परिवर्तित नाम) नाम का बच्चा है वह हमेशा जुआ खेल में जीतता है और रोज के 100 से 150 रुपए कमा लेता है और अन्य बच्चे जब उसको पैसे नहीं दे पाते तो बच्चों से अपनी मर्जी के काम करवाता है और उनको पैसे देने के लिए परेशान करता है। बच्चे अभिभावकों को देखकर गलत आदतों के शिकार हो रहे हैं अर्थात माता-पिता ही बच्चों के लिए अभिशाप बन रहे हैं।

पढ़ लिख कर अपनी कठिन विपरीत परिस्थितियों को बदलना चाहते है सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्टर मानसी, रिपोर्टर किशन

नोएडा सेक्टर 62 की झुग्गी बस्ती में दो बालिकायें घर का घरेलू कामकाज कर रही थी तब बालकनामा पत्रकार उन बालिकाओं के पास पहुंचे और उनसे बात कि, की क्या वह शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालय जाती हैं या नहीं? और दिनभर आखिर क्या करती रहती है? यह जानने का प्रयास किया। बालिका ने बताया की हम वर्तमान में अपने माता-पिता के साथ सेक्टर 62 में सड़क के किनारे झुग्गी डालकर रहते हैं, मूलतः हम बिहार के रहने वाले हैं और हम नोएडा में पिछले 5 वर्षों से रह रहे हैं। हमारे घर में हम चार सदस्य हैं जिसमें दो बहनें, एक भाई और माता, हमारे पिता की मृत्यु हो चुकी है। घर की स्थिति काफी खराब है तब पिताजी जिंदा थे तो पिताजी ही घर को संभाला करते थे, पिताजी की अचानक से मृत्यु होने के बाद घर में काफी परेशानियां आने लगी माताजी की 55 वर्ष की आयु हो गई है।

जब पिताजी की मृत्यु हो गई तो मजबूरन माताजी को घर से बाहर काम करने के लिए निकलना पड़ा। माताजी ने कई स्थान पर कई बिल्डिंगों में जा जाकर कामकाज के लिए पूछा पर माता जी को काम ना मिला जिस कारण माताजी उदास होकर घर पर आई और उन्होंने हमें यह सारी बात बताई पर हमने हौसला बनाते हुए माताजी को कहा की कोई समस्या की बात नहीं है। पिताजी नहीं है तो क्या हुआ, हम जाएंगे कामकाज पर और कामकाज हम करेंगे तो माताजी ने हमें समझाते हुए कहा की मैं तुम्हें कामकाज पर नहीं भेजना चाहती हूँ। जब तक मैं जिंदा हूँ तब तक मैं तुम्हें पढ़ाऊंगी-लिखाऊंगी और आगे बढ़ाऊंगी, वर्तमान में माताजी रोज सुबह से कबाड़ा बीनने के लिए निकल जाती हैं और कबाड़ा बीन कर जो पैसा आता है उन पैसों से माताजी घर का खर्च चलाती है और हमें उन्हें पैसों से शिक्षा प्राप्त भी करवाती है। कोई भी अन्य पुस्तक पेन-पेंसिल आदि की जरूरत पड़ती तो माताजी हमें इन सभी के लिए पैसे देती है। हम वर्तमान में रोजाना सरकारी स्कूल जाते हैं और हम दो बहने कक्षा 7 और 8 में और हमारा छोटा भाई कक्षा 5 में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। हमारा यह सपना है कि हम हमारी इन कठिन विपरीत स्थिति को पढ़ लिख कर बदलना चाहते हैं और हम चाहते हैं कि हम झुग्गी में न रहकर किराए के कमरे में या फिर पढ़ लिखकर अपना खुद का छोटा सा घर खरीद कर उसमें रहे और माताजी का ध्यान रखें।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

निर्माणाधीन इमारतों में से लकड़ी लाकर, बच्चे जलाते हैं घर का चूल्हा

बातूनी रिपोर्टर राजा व रिपोर्टर किशन

नोएडा की कुछ झुग्गी बस्ती के 400 मीटर की दूरी पर जहाँ बिल्डिंग का निर्माण हो रहा था उस बिल्डिंग के अंदर कुछ बच्चे अपने माता-पिता के साथ और कुछ बच्चे अकेले कार्य करने में लगे हुए थे। इस सन्दर्भ में जब बालकनामा पत्रकारों ने बिल्डिंग से 400 मीटर की दूरी पर जो झुग्गियां स्थित थी उस झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चों से बात करके जाना की इसमें अधिकतर बच्चे काम किस लिए कर रहे हैं? तब बच्चों ने बताया की इस बिल्डिंग में बच्चे तरह-तरह का कार्य करने में लगे हुए हैं जैसे ईंट तोड़ना, सीमेंट पहुंचाना, बिल्डिंग की साफ सफाई करना आदि। झुग्गी बस्ती में रहने वाले अधिकतर लोगों के घरों में चूल्हे पर भोजन बनता है। गैस सिलेंडर इतना महंगा है की सिलेंडर खरीदने तक के पैसे इकट्ठा नहीं हो पाते हैं इस कारण रोजाना चूल्हे पर भोजन बनता है। बिल्डिंग में जितने भी लोग एवं बच्चे कार्य कर रहे हैं इनका एक उद्देश्य यह होता है कि कार्य करें और अपने कार्य करने के पैसे हमें सुरक्षित और समय पर मिल जाए, दूसरा उद्देश्य बिल्डिंग

में कार्य करने का यह भी है कि जब बिल्डिंग का निर्माण हो रहा होता है तो उस बिल्डिंग में कई लकड़ियों का भी इस्तेमाल होता है बड़ी-बड़ी लकड़ी, प्लाई, बांस आदि जब उनका पूरा इस्तेमाल हो जाता है तो टूट कर नीचे गिरा दी जाती है और बिल्डिंग में कामकाज करने वाले लोग उस लकड़ी, बांस, प्लाई, आदि को अपने साथ लेकर आ जाते हैं बिल्डिंग में से अधिकतर लकड़ियां लोगों को प्राप्त हो जाती हैं और उन्हें लकड़ियों से घर में चूल्हा जलता है। बच्चों ने बताया यदि बिल्डिंग में से लकड़ियां नहीं मिल पाती तो हम लोगों को खरीद के लकड़ी लानी पड़ती है या जंगलों में जाकर बीन कर लानी पड़ती है फिर जाकर घर का चूल्हा आदि जलता है। पत्रकारों ने बच्चों से यह पूछा की क्या बिल्डिंग में से जो बच्चे लकड़ियां लेकर आते हैं क्या उन्हें कोई इंकार नहीं करता तो बच्चों ने बताया जो उनका ठेकेदार होता है वह लकड़ियां लाने से इनकार नहीं करता पर ठेकेदार से बड़ा भी कोई एक ठेकेदार होता है यदि वह किसी को लकड़ी ले जाता हुआ देख लेता है तो वह उन्हें तुरंत मना कर देता है और बिल्डिंग में से कार्य करने के लिए भी मना कर देता है और उन्हें बिल्डिंग से हटा देता है।

ऑनलाइन एवं डिजिटल खेलों के आदि बन रहे बच्चे, खो रहे अपना बचपन

बातूनी रिपोर्टर शिवम,रिपोर्टर किशन

वर्तमान में टेक्नोलॉजी लगातार बढ़ती ही जा रही है अब तो आलम यह की सौ प्रतिशत में से 10% घर ही ऐसे होंगे जिनके पास फोन नहीं होगा और 90% लोगों के पास घरों में मोबाइल फोन है। इसके कुछ फायदे भी है जैसे आसपास में जो भी दुर्घटना या कोई मुख्य बात हो तो बड़ों से पहले बच्चों को पता चल जाता है। सेक्टर 18 की बस्ती में बच्चों से मिलने के दौरान पत्रकारों ने देखा की बस्ती में अधिकतर बच्चे नजर ही नहीं आ रहे थे तब एक बालिका से बात की तो बालिका ने बताया की आपको इस बस्ती में बच्चे इस कारण नजर नहीं आ रहे हैं क्यूंकि इस बस्ती से 2 किलोमीटर दूरी पर सेक्टर 16 पड़ता है, जहां पर और झुग्गी बस्ती स्थित है और उस बस्ती में एक वीडियो गेम की दुकान खुल गई है जिस दुकान में बच्चे सुबह से वीडियो गेम खेलने के लिए चले जाते हैं। अब वीडियो गेम का नाम सुनकर तो आप जान ही गए होंगे अधिकतर गांवों में वीडियो गेम जैसी दुकाने उपस्थित है।

पहले हम वीडियो गेम के बारे में जानते हैं की वीडियो गेम का नाम क्या है वह कैसे खेल सकते हैं। यह दुकाने सुबह 7:00 बजे से खुल जाती है और वहां पर दो गेम के बॉक्स रखे हुए होते हैं जिनमें टोकन डालकर गेम आरंभ हो जाता है। दुकान पर उपस्थित दुकानदार बच्चों को 10 में चार टोकन देता है और एक टोकन से 2 बार खेल सकते हैं यदि दो बाजी में जीत गए तो तुम और अन्य बार खेल सकते हो यदि हार गए तो फिर दोबारा दूसरा टोकन डालना पड़ता है। खेल के दो नाम है पहला टेकन टेक टूनामेंट और दूसरा मुस्तफा और अधिकतर इन दुकानों पर जगह-जगह के बच्चों की भीड़ हमेशा लगी रहती है। इस गेम के कारण बच्चे ना तो शिक्षा पर अच्छे से ध्यान देते हैं और ना ही अपने घर के और अन्य कामकाज पर। जब मर्जी बच्चों को माता-पिता से पैसे मिलते हैं तो बच्चे तुरंत इस खेल को खेलने के लिए चले जाते हैं। इतना ही नहीं इस बस्ती में जिन-जिन बच्चों के घर में टच स्क्रीन के मोबाइल हैं वह बच्चे अपने माता-पिता के मोबाइल में यह खेल डाउनलोड कर लेते हैं और घर में खेलते रहते हैं। जिन बच्चों का मोबाइल घर पर ही उपस्थित रहता है, माता-पिता कामकाज पर नहीं ले जाते तो बच्चे दिन भर इसी मोबाइल पर खेल में लगे रहते हैं और जिन बच्चों के माता-पिता मोबाइल साथ में कामकाज पर ले जाते हैं तो वह बच्चे माता-पिता के आने के बाद खेल खेलते हैं।

बच्चे बना रहे है तरह-तरह के बहाने, शिक्षा से हो रहे दूर

ब्यूरो रिपोर्ट

जब बालकनाम पत्रकार नोएडा सेक्टर 18, नन्हे परिंदे की वेन पर पहुंचे तो नन्हे परिंदे वेन से शिक्षा प्राप्त कर रहे बच्चों से पत्रकारों ने बात की तब आसपास की झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चों में से दिलीप (परिवर्तित नाम) ने बताया की हम नन्हे परिंदे वेन पर शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते हैं पर झुग्गी बस्ती में रहने वाले कुछ ऐसे बच्चे हैं जिनका नाम इस वेन पर तो नामांकित है पर वह कुछ ना कुछ बहाना बनाकर इस वेन पर पढ़ने के लिए नहीं आते हैं। बालक ने बताया की चेतना संस्था की कार्यकर्ता ने कुछ बच्चों का स्कूल में दाखिला भी करवा दिया है पर फिर भी वह स्कूल नहीं जाते है और बहाना बनाकर रह जाते हैं। दिलीप ने बताया एक मेरा दोस्त है जिसकी उम्र 13 वर्ष है, वह मेरे बगल में ही रहता है और उसके घर में पांच सदस्य हैं जिसमे दो भाई, एक बहन और माता-पिता है। उसके माता-पिता गोलगप्पे बेचने के ठेले पर कार्य करते हैं पर वह अपने कार्य में इतने व्यस्त रहते हैं कि वह अपने उस बालक पर ध्यान नहीं दे पाते पर वह इतना चालाकी करता है कि वह

माता-पिता को कह देता है कि मैं स्कूल जा रहा हूँ पर वह स्कूल ना जाकर और अपने मित्रों के साथ जाकर खेलने लग जाता है। बालक को घर से 50 से 100 रुपये रोजाना माता-पिता दे देते हैं और वह चीज न खाकर गुची वाला खेल खेलता है जिस खेल में हारता-जीतता है पर वह कभी-कभी माता-पिता को बहाना मार देता है कि मेरे पेट में दर्द हो रहा है, या मेरे कपड़े गंदे पड़े हैं, या बैग फट गया है, इस कारण मैं स्कूल नहीं जा रहा हूं तो पिताजी यकीन मान लेते हैं पर माता-पिता के पास इतना समय भी नहीं है कि विद्यालय में पेरेंट्स मीटिंग में भी जा पाए क्योंकि वह सुबह से ही अपने कामकाज के लिए निकल जाते हैं और ना ही स्कूल से कोई फोन आता है और इस बस्ती में एक ही बालक नहीं और अन्य बालक भी हैं, जो ऐसा ही हरकतें करते हैं और माता-पिता उनके इन कार्यों पर ध्यान नहीं देते हैं।

बाल्यावस्था की उम्र में ही बच्चों की पढाई-लिखाई छुड़वाकर काम पर लगा देते हैं अभिभावक

बातूनी रिपोर्टर सुमित, रिपोर्टर राज किशोर

हरियाणा के वजीराबाद की झुग्गियों में रहने वाले बच्चों के पास जब बालकनामा रिपोर्टर गए तो देखा की वहीं पास में ही शराब का ठेका है जहाँ शराबी शराब पीकर बोतल वहीं छोड़ देते हैं जिससे कि सड़क पर रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चे उन्हें उठाकर कबाड़ी वाले को बेचा करते हैं। जब रिपोर्टर ने उन बच्चों को देखा की वे ठेके पर शराब की बोतलें चुनने का काम कर रहे है तो रिपोर्टर ने एक बच्चे को रोक कर उनसे उनका नाम पूछा और वह यह काम क्यों करते हैं यह भी उनसे जानने की कोशिश की। पहली बार में तो बच्चे घबरा गए कि यह कौन है और ये हमसे ये सब सवाल क्यों पूछ रहे हैं? जिससे कि उनमें से कुछ बच्चे भाग गए और एक बच्चा वहीं खड़ा रहा तब रिपोर्टर ने उस बच्चे से पूछा कि आपका क्या नाम है? तब उस बच्चे ने बताया कि मेरा नाम शुभम (परिवर्तित नाम) है, फिर रिपोर्टर ने पूछा की आप यह काम क्यों करते हो, ठेके पर जाकर शराब की बोतले क्यों उठाते हो क्या आपको डर नहीं लगता है की आपको कोई शराबी कुछ गलत बोल दे या कोई गलत हरकत कर दे? तब शुभम ने बताया की हां, यहाँ का मालिक डाटता है और मारता भी है लेकिन हम छुप कर शराब की बोतले चुन लेते हैं और उसे जाकर कबाड़ी वाले के पास बेचा देते है। जब रिपोर्टर ने शुभम से पूछा की आपको यह काम करने के लिए कौन बोलता है? तब शुभम ने बोला कि मेरे पापा और चाचा काम करने के लिए मुझे भेजते हैं, बालक ने बताया कि मैं पहले दूसरों के घरों में काम किया करता था लेकिन मैंने वह काम छोड़ दिया और ठेके पर जाकर शराब की बोतले बीनने लगा। जब रिपोर्टर ने शुभम से पूछा की आपके पिता ऐसा क्यों बोलते हैं? आपके चाचा और पापा काम नहीं करते है क्या? तब शुभम ने बोला कि मेरे पापा शराब पीकर घर पर पड़े रहते हैं और चाचा भी नशा करता है, शुभम ने यह भी बताया कि उसके चाचा नशा करने के लिए अपने हाथ पर कुछ रख लेते हैं और उसको सूंघते हैं जिससे कि मुझे डर लगता है जिस कारण कि मैं घर भी नहीं जाता और कभी-कभी मैं सड़क पर ही सो जाता हूं या मैं कभी किसी मंदिर में भी सो जाता हूं। रिपोर्टर द्वाराआगे शुभम पूछा गया की आप पढ़ाई नही करते हो? तब शुभम ने बताया की रहने के लिए मेरे पास घर ही नहीं है और खाने के लिए भी कुछ खाना नहीं है तो हम पढ़ाई के लिए पैसे कहां से लाएंगे? शुभम ने कहा की जब मैं अपने पापा को बोलता हूं कि मेरा स्कूल में दाखिला करवा दो ताकि मैं पढ़ने जाया करूं, तो पापा उसको ऐसा कहने पर मारते हैं और बोलते हैं कि तुम्हें पढ़ाई लिखाई नहीं करनी है तुम काम करो और मेरे लिए कहीं से भी पैसे कमाकर लेकर आओ।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

शौचालय न होने के कारण बच्चों को बुनियादी जरूरतों के लिए भी रोज जूझना पड़ता है

ब्यूरो रिपोर्ट

सड़क पर और झुग्गी बस्ती में रह रहे सड़क एवं कामकाजी बच्चों को रोजाना एक न एक समस्याओं का सामना करना पड़ता है पर कुछ ऐसी समस्याएं होती हैं कि वह समस्या होकर भी समस्या को बताने में सहज नहीं रहते है। नोएडा की 40 बस्तियों में पहुंचने के दौरान पत्रकारों ने बच्चों से बात की तब अधिक चिंतित होकर 16 वर्ष की एक बालिका ने अपनी परेशानी को विस्तार से बताया की हम अपने माता-पिता के साथ बस्ती में रहते हैं, हमारे माता-पिता सुबह से कामकाज पर मजदूरी करने चले जाते हैं। झुग्गी बस्ती में सबसे बड़ी एक समस्या यह है कि इस बस्ती में 40 झुग्गीयों में से केवल पांच झुग्गीयों में ही शौचालय हैं और अधिकतर लोग झुग्गी बस्ती के कुछ ही दूरी पर जंगल है वहां पर सभी लोग खुले में शौच करने के लिए जाते हैं पर आप तो यह जानते ही होंगे कि पुरुष लोग को शौच करने में कोई

परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता है और जब महिला या बालिका शौच करने के लिए जाती है तो काफी परेशानियों से रोजाना उन्हें जूझना पड़ता है। एक दिन दोपहर में मुझे शौच करने के लिए जाना था पर घर पर कोई भी बड़ा सदस्य जैसे माताजी या बड़ी बहन कोई भी मौजूद नहीं था जिस कारण मुझे अपनी सहेली को अपने साथ लेकर जाना पड़ा पर जब हम और हमारी सहेली शौच करने के लिए जंगल गए तो वहां पर हमें पता नहीं था कि कुछ पुरुष लोग भी दुबके हुए हैं। जब हम शौच कर रहे थे तो जो झाड़ी में पुरुष लोग दुबके हुए थे उन लोगों ने हमारे साथ गलत करने का विचार सोच वह हमारे पास आ पहुंचे और हम वहां से तुरंत भाग निकले, फिर वह व्यक्ति लोग कुछ ही दूरी तक हमारा पीछा करे और फिर वह वहां से भाग गए और इतनी देर में हम अपनी बस्ती में पहुंच गए। बालिका ने बताया कि इस बस्ती में कई बार शौचालय बनाने की बात भी हुई है पर सब लोगों से 300 या 500 रुपये तक शौचालय बनवाने के लिए दिए जाते हैं पर फिर उसे पर कुछ कार्य नहीं होता और पैसे फिर वापस मिल जाते हैं। हम बच्चों का यही कहना है कि इस बस्ती में जल्द से जल्द शौचालय बनाने में कोई मदद करें ताकि हम बच्चों को इन परेशानियों से न जूझना पड़े।

नशेड़ी मनचले बिगाड़ते हैं झुग्गियों का माहौल, बालिका हुई परेशान

ब्यूरो रिपोर्ट

शराब पीने वाले आराजक मदमस्त एवं मनचले व्यक्तियों से अक्सर बच्चे परेशान एवं डरे हुए रहते है। ऐसी एक घटना नोएडा की एक बस्ती में भी घटी जहाँ बालकनामा के पत्रकारों ने कुछ बच्चों से बात करते हुए उनकी परेशानियों को जानने का प्रयास किया, तब एक 13 वर्ष की बालिका ने अपनी सहेली की परेशानी को बताते हुए कहा की हम सब बच्चे झुग्गी बस्ती में अपने माता-पिता के साथ रहते हैं और इस स्थान पर लगभग 80 झुग्गियां स्थित है और सभी झुग्गी में रहने वाले अधिकतर लोग दैनिक मजदूरी एवं कामकाज के लिए जाते हैं। कुछ बच्चे स्कूल भी जाते हैं, एक मेरी सहेली है जिसकी उम्र 12 वर्ष है और भी बच्चे हैं जो मेरी सहेली के साथ रोजाना स्कूल जाते हैं। एक दिन मैं अपनी सहेली के साथ मार्केट की ओर जा रही थी तब मेरी सहेली ने अपनी परेशानी को मुझे बताते हुए कहा कि जब मैं रोजाना स्कूल जाती हूं तो रास्ते में एक व्यक्ति है जो रोजाना शराब पीता है और आती-जाती लड़कियों को घूर-घूर कर देखता है और इशारे करता है और विस्तार से जानने पर बालिका ने बताया कि यह बात मेरी सहेली को अच्छी नहीं लगती, एक दिन जब वह स्कूल जा रही थी तब वह उसे मिला तो उस समय उस व्यक्ति को वह कुछ नहीं कह पाई और डर के मारे वह वहां से भागकर स्कूल चली गई और फिर स्कूल से आने के बाद वह काफी सहम गई । उसने हिम्मत करके अपने पिता को यह बात बताई और पिताजी ने यह बात सुनकर उसे समस्या का हल करने के लिए स्कूल में यह समस्या बताने के लिए गए पर बालिका ने यह समस्या के बारे में स्कूल में किसी अध्यापक या अध्यापिका को इसकी जानकारी नहीं दी थी। इस कारण स्कूल से यही जवाब आया कि हमें इसकी जानकारी नहीं है, फिर बालिका से पूछा तो बालिका ने बताया कि मैं काफी डरी हुई थी जिस कारण मैंने यह बात स्कूल में किसी को नहीं बताई, इस घटना के बाद अब बालिका के पिताजी रोजाना बालिका को स्कूल छोड़ने के लिए आते और स्कूल से लेकर जाते हैं।

अध्यापक ने गुस्से में आकर बच्चों पर उठाया हाथ, सहमे बच्चे फिर से स्कूल जाने से रहे डर

ब्यूरो रिपोर्ट

यदि बच्चे शैतानी करे तो क्या उन्हें इतना मारना चाहिए जितना इन बच्चों को मारा गया है? जैसा की सभी जानते हैं विद्यालय में यदि बच्चे गलती करते हैं या ज्यादा शैतानी करते हैं तो उन्हें समझाया या अधिक से अधिक धमकाया जाता है पर उन्हें इतना नहीं मारा जाता की वह विद्यालय आने के लिए मना ही कर दें या विद्यालय से नाम कटवाने के लिए राजी हो जाए। ग्रेटर नोएडा के प्राथमिक विद्यालय हल्द्वानी रोड हबीबपुर गांव में रहने वाले एवं पांचवी कक्षा में शिक्षा प्राप्त करने वाले इन मासूम बच्चों में से 13 वर्ष की एक बालिका ने बताया की हम शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालय गए थे पर अध्यापक को कुछ महत्वपूर्ण काम से ऑफिस वाले रूम में जाना पड़ा और हमारी कक्षा के बच्चे अध्यापक ना होने की वजह से अधिक शोर-शराबा करने लगे और इस तरह वे बिना पूछे कक्षा से बाहर निकल गए और पानी पीने के लिए चले गए एवं हम भी अपनी सहेली के साथ क्लास में बैठकर बात कर रहे थे पर जब अध्यापक ने कक्षा से अधिक शोर शराबा सुना तो अध्यापक कक्षा में तमतमाते हुए गुस्से में आए और बिना कुछ सोचे समझे, बिना कुछ सुने, जिस काउंटर पर सर अपनी छड़ी, रजिस्टर, मार्कर, आदि रखते हैं उसी में से सर ने अति क्रोध में आकर लोहे वाली हथौड़ी निकाली और लोहे वाली हथौड़ी के पीछे वाले डंडे से मारने लगे। सर ने सभी बच्चों को मारा और किसी की भी कोई बात नहीं सुनी जो बच्चे क्लास से बाहर नहीं गए थे और शांत बैठे हुए थे उन्हें भी हथौड़ी से मारा। हम बच्चों ने उस समय अध्यापक या अध्यापिका को कुछ नहीं कहा परन्तु जब विद्यालय की बड़ी अध्यापिका आई तो उन्होंने भी क्रोध में आकर यह कहा कि यदि तुम्हें मारो तो तुम अपने घर वालों यानी माता-पिता को बुला लेकर आ जाते हो और बच्चों ने यह बात भी सुनकर उन्हें कुछ नहीं कहा। जब हम घर पर आ गए तो हमने अपने माता-पिता को भी यह बात बताई पर माता-पिता के पास इतना समय नहीं की वह पेरेंट्स मीटिंग में जा पाए। अधिकतर बच्चों के द्वारा अपने माता-पिता को यह बात बताने के बाद भी माता-पिता विद्यालय नहीं गए अंततः बच्चों ने क्रोध में आकर डरते हुए कहा की यदि हम बच्चों को इतना बुरा मारा जाएगा तो हम बच्चे स्कूल नहीं जाएंगे और स्कूल से नाम कटवा लेंगे।

पत्थर से सिक्कों पर निशाना मार जुआ खेलते सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर : आकाश,
बातूनी रिपोर्टर : अनुज

जयपुर की कुछ बस्तियों में लगातार जुआ खेलना बच्चों का मनपसंद खेल बन गया है, बच्चे बस्तियों में कोई भी खेल खेलते समय पैसों की हार-जीत जरूर लगते हैं।

इस बार कुछ अलग ही खेल देखने को मिला जब बालकनामा रिपोर्टर आकाश जयसिंहपुरा खोर बस्ती का दौरा करने जा रहे थे तब बस्ती में कुछ बच्चों को खेलते हुए देखा तो बालकनामा रिपोर्टर ने खेल की पूरी प्रक्रिया जानने के लिए जब बच्चों से बात की तो बातूनी रिपोर्टर अनुज ने बताया कि इस खेल में 7 से 8 बच्चे शामिल होते हैं और जिसके पास जितने पैसे होते हैं वह लेकर आते हैं और जमीन पर गोला बनाकर उसमें सिक्के रखे जाते हैं और बच्चे पत्थर से सिक्कों पर निशाना लगाते हैं। जैसे किसी बच्चे ने पांच के सिक्के पर निशाना बनाया और वह सिक्का गोले से बाहर निकल जाता है तो वह पैसा उस बच्चे को मिल जाता है और यदि जिसका निशाना सही नहीं लगता वह खेल से बाहर हो जाता है लेकिन उसे पैसे वापस नहीं मिलते इस तरीके से बच्चे प्रतिदिन पत्थर से सिक्के पर निशाना मार कर खेल खेलते हैं। इन मासूम बच्चों को नहीं पता की जाने-अनजाने रूप से वह किस तरह जुए की आदत का शिकार हो रहे है।

फंड्स के अभाव में बंद पड़ा था सार्वजनिक शौचालय, लिखित शिकायत के बाद आया बदलाव

बातूनी रिपोर्टर - खालिद,
बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार दिल्ली के शकूर बस्ती का दौरा करने गए तो उन्हें वहां के बातूनी रिपोर्टर खालिद ने बताया की उनके इलाके में सार्वजनिक शौचालय तो है लेकिन कुछ समय पहले तक वे उसका इस्तेमाल नही कर पा रहे थे, क्योंकि सार्वजनिक शौचालय सितम्बर 2023 से बंद पड़ा था। खालिद ने बताया की पहले शौचालय की साफ सफाई न होने के कारण गंदगी फैली हुई रहती थी और ना ही उसमें पानी आता था। काफी समय से एमसीडी की सफाई की गाड़ी भी वहां पर नही आती थी। शौचालयों की सफाई न होने के कारण आसपास के क्षेत्र वासियों को खुले में शौच के लिए जाना पड़ता था। बच्चो को भी रेलवे पटरी के किनारे शौच के लिए जाना पड़ता था जिससे किसी भी क्षण ट्रेन से टकराकर दुर्घटना का खतरा मंडराता रहता था एवं महिलाओं और बच्चियों को असामाजिक तत्व परेशान करते थे। लोगो ने बताया की शकूर बस्ती का सार्वजनिक शौचालय बहुत दिनों से बंद पड़ा है वहां के केयर टेकर जय प्रकाश से बात करते है तो वो केवल इतना बताते है की उन्हे सुपरवाईजर ने किसी को भी शौचालय इस्तेमाल करने से मना किया है। फिर लोगो ने वहां के प्रधान जी को बुलाया और उनसे बात की उन्होंने बताया की आप सब यहाँ के अधिशाषी अभियंता तरुण गौर से बात कीजिए। उनका नंबर पास में ही लगे बोर्ड से नोट करके उनको कॉल किया और उनसे बात की तरुण जी ने बताया की उनके पास जो फंड आता था, वह अब नहीं आ रहा है। इस लिए उन्होंने फंड के अभाव में शौचालय की हर एक सुविधा अनिश्चित काल के लिए बंद कर दी है और यह कहकर उन्होंने कॉल डिस्कनेक्ट कर दिया। लोगो ने उनको दोबारा फोन किया लेकिन उन्होंने एक बार भी फोन नहीं उठाया। तो सभी लोगो ने तरुण जी को एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने शकूर बस्ती के सार्वजनिक शौचालय की सारी दिक्कतों को दशार्ते हुए विनम्र शब्दो में लिखा की यहाँ के शौचालय को वापस पहले की तरह चालू किया जाए फिर तरुण जी ने उच्च अधिकारियों को क्षेत्रवासियों की समस्या से अवगत करवाया तब जाकर आम लोगो के लिए शौचालय चालू हुआ और लोगो ने राहत की सांस ली।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

स्कूल में दाखिला न होने के कारण किशोर करता है दिन भर हस्तशिल्प का काम

बातूनी रिपोर्टर - लव,
बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार पश्चिमी दिल्ली के एन 86 लॉरिंस रोड़ का दौरा करने गए तो उन्हें वहां के बातूनी रिपोर्टर लव ने बताया कि उसके घर के पास एक लड़का रहता है जिसका नाम अंशुमन (परिवर्तित नाम) है और वह स्कूल जाना चाहता है। उसने बताया कि उसके पिता की किसी कारणवश नौकरी चली गयी थी इसलिए परिवार कुछ समय के लिए गांव चला गया जिस वजह से वह नौवीं कक्षा के बाद स्कूल नहीं जा सका। अब एक साल बाद जब वो दिल्ली वापस आ गया है तो उसे दसवीं कक्षा में दाखिला नहीं मिल रहा जिस वजह से वह काफी हताश और परेशान है। उसके पिता पैसे कमाने के लिए प्लास्टिक की कंपनी में कड़ी मेहनत करते है, उसके पिता पहले एक कंपनी में कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारी के तौर पर काम करते थे वहां उन्हें बहुत कम वेतन मिलता था।

बालक के परिवार में कुल सात सदस्य है जिसमेउसके माता-पिता, तीन बड़े भाई और एक छोटा भाई शामिल हैं। बालक की माता ने पैसे कमाने के लिए हस्तशिल्प बेचने और बनाने का काम शुरू किया, हालाँकि बालक स्कूल नहीं जा पा रहा है फिर भी उसने अपनी पढ़ाई जारी रखी और चेतना एनजीओ के सेंटर पर पढ़ने जाता रहा और इस प्रकार नए सत्र में उसके दाखिले का दोबारा प्रयास किया जाएगा। स्कूल नहीं जाने के कारण वो दिन भर घर पर ही रहता जिस वजह से माता-पिता के दबाव के कारण अब वो घर पर ही दिन भर हस्तशिल्प बनाने में अपनी माँ की मदद करता है। घर पर काम करके वो प्रतिदिन के सौ रुपए कमा लेता है। झुग्गी-बस्तियों में रहने वाले अधिकांश बच्चे ऐसे माहौल में पले-बढ़े होते हैं जहां शिक्षा से ज्यादा तवज्जो कमाई को दी जाती है इसलिए या तो वह खुद स्कूल जाना नहीं चाहते या परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति उन्हें ऐसा नहीं करने देती। ऐसे बच्चों को बेहतर बनाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम है उन्हें प्रोत्साहित करना, जब उनमें आत्मविश्वास पैदा करेंगे तो वे अपनी पढ़ाई पर अधिक ध्यान केंद्रित कर पाएंगे। ऐसे में बच्चों के साथ-साथ उनके परिवारों को भी यह समझाना होगा कि शिक्षा ही उनका भविष्य संवार सकती है।

घर खर्च में मां की आर्थिक मदद करने के लिए काम करने को मजबूर मासूम

बालकनामा रिपोर्टर : आकाश,
बातूनी रिपोर्टर : रिहान

बालकनामा रिपोर्टर आकाश ने जयपुर की कच्ची बस्ती का दौरा किया और बच्चों से उनकी समस्या और अनुभव जानने के लिए बातचीत की तब 12 वर्षीय बालक रिहान (परिवर्तित नाम) ने अपने बारे में बताया की मेरा स्कूल जाने का बहुत मन होता है और मैं कक्षा छठी में पढ़ता भी हूं लेकिन मैं प्रतिदिन विद्यालय नहीं जा पाता हूं। क्योंकि मैं घर में मां की आर्थिक रूप से कुछ मदद कर सकूं इसके लिए मैं काम करता हूं और इसी कारण मैं प्रतिदिन स्कूल नहीं जा पाता और अब तो लगता है की शायद इस कारण मेरा स्कूल से नाम भी कट जाये। वैसे अगर मैं अपने बारे में बताऊँ तो हम तीन बहन-भाई हैं और हमारे पिता हमारे साथ नहीं रहते हैं, मैं अपने चचेरे भाई के साथ जयपुर के प्रसिद्ध पर्यटक स्थल हवामहल के बाहर फोटोग्राफी की जो दुकान लगी है वहां पर काम करता हूं और वहां पर आने वाले पर्यटकों को जोर-जोर से आवाज लगाकर फोटो खींचने के लिए बुलाता हूं। जब बालकनामा रिपोर्टर आकाश ने पूछा कि इस काम को करने से कितने रुपए मिलते हैं तब बालक रिहान ने बताया कि प्रत्येक ग्राहक पर मुझे 50 रुपए मिलते हैं जब छुट्टियों का माहौल होता है और पर्यटक ज्यादा आते हैं तो मुझे रोज के लगभग 250 रुपए मिल जाते हैं और सामान्य दिन में कम से कम 150 रुपए मिल जाते है इन पैसों को मैं अपनी मां को देता हूं ताकि घर खर्च में काम आ सके।

असामाजिक तत्वों से परेशान क्षेत्रवासी, बच्चों व महिलाओं का घर से निकलना हुआ दुभर

बातूनी रिपोर्टर - सुफियान, बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार (पश्चिमी दिल्ली)

जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार पश्चिमी दिल्ली के जखिरा का दौरा करने गए तो बातूनी रिपोर्टर सुफियान ने उन्हें बताया कि असामाजिक तत्वों ने उनके इलाके में उपद्रव मचा रखा है और लोगों का जीना मुश्किल कर दिया है। उसने बताया कि उनके मोहल्ले में नशेड़ियों, जुआ खेलने वालों और आपराधिक तत्वों का जमावड़ा रहता है, जो आम नागरिकों को बिना वजह परेशान करते हैं। अपराधी खुलेआम क्षेत्रवासियों और राहगीरों से पैसों की छीना-झपटी को आये दिन अंजाम देते हैं और अवांछित गतिविधियां संचालित करते हैं। लोग सड़कों और चौराहों पर खुलेआम शराब पीते हैं और शोर मचाते हैं, जिससे महिलाओं और लड़कियों का घर से बाहर निकलना मुश्किल हो गया है। शांति प्रिय लोगों के घर जाकर उनके साथ गाली-गलौज करना और हथियारों के बल पर लोगों को आतंकित करना रोजमर्रा की बात हो गयी है। हर दिन अपराधों की फाइलें लिखी जा रही हैं। ऐसा लग रहा है मानों अपराधियों का मनोबल गिरने के बजाय बढ़ता ही जा रहा है। पुलिस और प्रशासन भी तब जागता है जब कोई जघन्य अपराध हो जाता है। छोटी-मोटी घटनाओं पर तो प्रशासन के सिर पर जूँ तक नहीं रेंगती। आपराधिक गतिविधियां क्षेत्र को कलंकित करने में कोई कसर नहीं छोड़ रही हैं, जो की बेहद चिंता का विषय है। आपराधिक गतिविधियों के कारण यहां रहने वाले लोगों के लिए यह बेहद असुरक्षित हो गया है। स्थानीय थाने के बीट अधिकारी अनेक स्थानों पर गश्त करते हैं, लेकिन पुलिस उनके मोहल्लों पर नजर नहीं रख रही है, जबकि इन दिनों मोहल्लों में अवैध गतिविधियां अधिक संचालित हो रही हैं। माता-पिता को भी डर रहता है कि कहीं उनके बच्चे बुरी संगत में न पड़ जाएं, जिसके कारण वे अपने बच्चों को खेलने के लिए घर से बाहर नहीं जाने देते। पुलिस प्रशासन से अपेक्षा है कि क्षेत्र में गश्ती करते हुए आपराधिक तत्वों पर नकेल कसें, ताकि असामाजिक तत्वों की गतिविधियों पर अंकुश लगाया जा सके, ताकि क्षेत्र में शांति कायम रह सके।

सपनों पूरा करने के लिए बालिका ने भरी उड़ान बनना चाहती है आईएएस अधिकारी

बालकनामा रिपोर्टर : काजल,
बातूनी रिपोर्टर : नैना

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने मांग्यावास कच्ची बस्ती का दौरा किया और बच्चों से उनके सपनों के बारे में बातचीत की तभी बालिका नैना ने बताया कि आज से लगभग 5 से 6 साल पहले हम कोटा में रहते थे और वहां पर मैं एक आईएएस अधिकारी के बच्चों की देखभाल करने का काम करती थी उन मैडम को देखकर मुझे बहुत खुशी होती थी और तभी से मैंने सोचा कि मैं भी बड़ी होकर आईएएस अधिकारी बनूंगी और मैनें पढ़ने की कोशिश शुरू की लेकिन कर्ज होने के कारण और पिताजी का काम सही नहीं चल पाने के कारण जयपुर आना पड़ा और लगभग 5 साल से जयपुर की इस कच्ची बस्ती में रह रहे हैं। मैं विद्यालय में पढ़ना चाहती थी लेकिन दस्तावेज में कमियां होने के कारण विद्यालय में एडमिशन नहीं हुआ फिर एक दिन हमारी बस्ती में चेतना संस्था से संस्था के कार्यकर्ता आये और मेरे माता-पिता से मिले तब उन्होंने दस्तावेज बनवाने की कोशिश करने को कहा। इस प्रकार तभी से मैं चेतना सेन्टर से जुड़ गई और केंद्र पर नियमित रूप से आने लगी लेकिन मेरा वजन बहुत ज्यादा होने के कारण बच्चे मुझे बहुत चिढ़ाते और मुझे ऐसा लगता कि मैं इन बच्चों में सबसे बड़ी दिखाई देती हूं लेकिन मैंने ऐसी बातों पर ध्यान नहीं दिया। मुझे बहुत खुशी है कि अब मेरा विद्यालय में दाखिला हो गया है और मैं अच्छी पढ़ाई करके आईएएस बनना चाहती हूँ।

जागरूकता के अभाव के कारण बच्चों में फैल रही है बीमारियां

बालकनामा रिपोर्टर : काजल,
बातूनी रिपोर्टर : अरुण

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जब मांग्यावास की कच्ची बस्ती में दौरा किया तो 10 वर्षीय बालक अरूण (परिवर्तित नाम) से भेंट हुई तो रिपोर्टर ने देखा की बालक अरूण के हाथों पर बड़ी-बड़ी फुंसियां और काले - काले निशान हो रखे थे तब बालकनामा रिपोर्टर ने पूछा की यह तुम्हारे हाथों पर कब से हो रहा है और क्या आपने इस बारे में डॉक्टर को दिखाया? तब बालक अरुण ने बताया कि लगभग 20 दिन से मेरे हाथ पर बड़ी-बड़ी फुंसियां हो रही है और इनमें बहुत खुजली भी चलती है, इतना ही नही पहले यह छोटी सी जगह पर थी लेकिन अब फैलती जा रही है और मेरे माता-पिता दोनों ही घर से जल्दी काम पर निकल जाते हैं और मेरी बड़ी बहन नीम के पत्तों से मेरे हाथ साफ करती है और रोज सुबह बालाजी के मंदिर में झाड़ा लगवाकर लाती है लेकिन अभी तक ज्यादा फायदा नही हुआ बल्कि यह बीमारी मेरे साथ-साथ मेरे छोटे भाई को भी हो गई है। अरूण ने आगे बताया की इस बीमारी के कारण मैं स्कूल भी नहीं जा पा रहा हूं। बालकनामा रिपोर्टर ने अरुण की बड़ी बहन से भी बात की और उसे कहा कि वह झाड़े के चक्कर में ना रहे और अपने भाइयों को डॉक्टर को दिखाएं यह एलर्जी जैसी बीमारी लग रही है, यह बीमारी एक दूसरे को जल्दी फैलती है इसलिए इसे गंभीरता से लेवें और जल्द से जल्द नजदीकी डॉक्टर की सलाह अवश्य रूप से लेवे।

पेट भरने की खातिर घंटों लाइन में लगकर भंडारे का इंतजार करते है बच्चे

बातूनी रिपोर्टर- बादशाह,
बालकनामा रिपोर्टर- राजकिशोर

घाटा कांटेक्ट पॉइंट के पास के ही मंदिर की बगल में सेक्टर 56 थाना के पास में भंडारा खाने पर मजबूर हुए सड़क एवं कामकाजी बच्चे, यह सभी बच्चे घाटा गांव से ही है। जब इन सब बच्चों से रिपोर्टर राजकिशोर ने पूछा कि आप लोग घाटा गांव से सेक्टर 56 मंदिर में भंडारा खाने क्यों जाते हो? तो बच्चों ने बताया की हमें घर में खाना न मिलने के कारण हम भंडारा खाने जाते हैं और कबीर (परिवर्तित नाम) नाम के लड़के ने बताया की मेरी माँ यहां ही भीख मांगती हैं इसलिए हम दो वक्त की रोटी खाने के लिए भंडारा खाने चले आते हैं। सेक्टर 56 में ही नहीं बल्कि कोई भी मंदिर में भंडारा लगता है तो हम वहां भी भंडारा खाने चले जाते हैं और आगे बच्चों ने बताया की हम तो गरीब हैं इसलिए हमें जहां मिलता है खा लेते हैं। साहिल (परिवर्तित नाम) नामक बच्चे ने बताया की हम तो रात में ही रोड पर जब घूमते हैं तो कोई गाड़ी वाला आकर खाना दे जाता है और हम उसे खा कर अपना पेट भर लेते हैं या भंडारे में खाकर कुछ घर भी ले जाते है ताकि घर वालों का भी गुजारा हो जाये। बच्चों से जब रिपोर्टर ने पूछा कि तुम पढ़ाई नहीं करते? तब बच्चों ने बताया की कबीर मछली मंडी में काम करता है और साहिल सब्जी मंडी में काम करता है। जब रिपोर्टर ने साहिल और कबीर से पूछा कि क्या आप पढ़ाई नहीं करोगे? तब बच्चों ने बताया की हमें अब पढ़ाई करने का मन नहीं करता है क्योंकि अब हमारा बिलकुल भी पढ़ाई में मन नहीं लगता साथ ही हमारे घर में कोई भी हमारे लिए दो वक्त की रोटी का जुगाड़ नहीं कर सकता इसलिए हम काम करते हैं और दो वक्त की रोटी खाते हैं जब खाने को ही नहीं होगा तो पढ़ाई भी नहीं पाती।

सोसायटी के तथाकथित संभ्रांत समाज में भी भेदभाव झेल रहा बस्ती का मासूम

बालकनामा रिपोर्टर : आकाश,
बातूनी रिपोर्टर : अभिषेक

बालकनामा रिपोर्टर आकाश को बस्ती से बाहर एक अपार्टमेंट में बच्चे के काम करने की खबर मिली तो रिपोर्टर ने जाकर इस बारे में जानकारी ली। 12 वर्षीय बालक अभिषेक (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वह अपनी माता और पिता के साथ इस सोसायटी में पिछले 5 महीनों से रह रहा है। वो पहले कच्ची बस्ती में रहते थे पर रोज के झगड़े, खराब माहौल व पिता के शराब की लत के कारण वे वहां से छोड़कर यहां गार्ड की नौकरी निकली तो यहां मम्मी गार्ड के काम में लग गई। मम्मी सोसायटी के गेट पर गार्ड का काम करती है और पापा बेलदारी का काम करते है। बालक अभिषेक भी काम में मम्मी की मदद करता है। वहीं बहुत से ऐसे लोग भी सोसायटी में है जो बालक के परिवार को हीन भावना से देखते है, बालक बताता है कि उसके साथ सोसायटी के अन्य बच्चे नही खेलते है क्योंकि उनके अभिभावक उन्हें हमसे दूर रहने के लिए कहते है। इतना ही नही बालक से कभी नाली साफ करवाते है तो कभी अपने अपने घरों की सफाई करने के लिए मजबूर करते है।अभिषेक ने बताया कि वहां के कुछ लड़के उसे बस्ती वाला गरीब कहकर मजाक उड़ाते है वे सब खेलकूद में भी भेदभाव करते है और सोसायटी के पार्क में खेलने नही जाने देते हालांकि सफाई के लिए बालक को ही कहते है किन्तु खेलने के लिए मना करते है। बालक चाहता है की वह अब यहाँ से छोड़कर वापस बस्ती में ही चले जाए क्योंकि उनसे हर बार तिरस्कार, गालियां और भेदभाव सहन नही होता।बालक माता के घर का काम करने पर गार्ड की कुर्सी पर बैठकर अपने हिस्से की जिम्मेदारी पूरी कर रहा है पर ऊंची सोसायटी में रहने वाले पढ़े-लिखे लोग नैतिक व सभ्य आचरण न करके अपनी जिम्मेदारी पूरी नही कर पा रहे।

बालिकाओं की पढ़ाई छुड़वाकर माता-पिता ने ही किया उन्हें शिक्षा से वंचित

बातूनी रिपोर्टर - मंतशा एवं बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार(पश्चिमी दिल्ली)

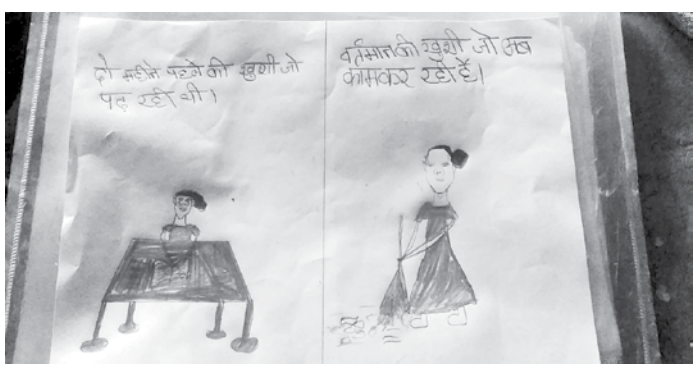

भारत में घरेलू आर्थिक कमजोरी के कारण अक्सर बच्चे अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़ देते हैं। स्कूल छोड़ने वाले बच्चों में अधिकतर लड़कियाँ होती हैं जो पढ़ाई छोड़कर घर के काम में अपने माता-पिता की मदद करती हैं। ऐसा ही एक मामला सामने आया जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार पश्चिम दिल्ली के वाल्मीकि कैंप का दौरा करने गए तो उन्हे वहां की बातूनी रिपोर्टर मंतशा ने बताया की उसकी एक सहेली थी जिसका नाम खुशी था जो उसके साथ ही आठवीं कक्षा में पढ़ती थी। वह पढाई-लिखाई के साथ साथ खेल-कूद इत्यादि में भी अव्वल थी, परीक्षा में वो कक्षा में सबसे अच्छे अंक लाती थी। उसका सपना था की वह बड़े होकर, पढ़-लिखकर एक बहुत बड़ी डॉक्टर बनेगी और गरीब मजलूमों का मुफ्त इलाज करेगी, जिसके लिए वो जी-जान लगाकर पढ़ाई करती थी। लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। उसके पिता जिस फैक्ट्री में नौकरी करते थे वो अचानक बंद हो गई जिस वजह से उसके पिता बेरोजगार हो गए। फिर एक दिन अचानक उसकी माता ने स्कूल से उसका नाम कटवा दिया और पूरे परिवार के साथ उसे जबरदस्ती उसके गांव बिहार के मधुबनी जिले लेकर चली गईं। वहां जाकर उसको घर का चूल्हा चौका संभालने में लगा दिया। उसके घर में माता-पिता, तीन बड़े भाई और एक छोटी बहन है। उसके माता-पिता ने उसके किसी भी भाई-बहन को ज्यादा पढ़ने नहीं दिया, अतः घर में कोई भी उच्च शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाया। सभी भाइयों को बचपन से ही मजदूरी पर लगवा दिया और उसकी छोटी बहन का भी स्कूल से नाम कटवाकर उसे भी शिक्षा से वंचित कर दिया। खुशी चाहती थी की उसको भी पढ़कर जिंदगी में आगे बढ़ने का मौका मिले लेकिन उसके माता पिता ने उसका सारा सपना चकना-चूर कर दिया। लड़कियां अपनी शिक्षा चाहकर भी पूरी नहीं कर पातीं क्योंकि उनके अपने ही साथ नहीं देते, माता पिता सोचते हैं कि लड़कियां पढ़-लिखकर क्या करेंगी, एक दिन घर छोड़कर दूसरे के घर चली जाएंगी, तो उन्हे पढ़ाने का क्या ही फायदा।

स्कूल जाने की उम्र में मिली घर की जिम्मेदारी, शिक्षा में रुकावट बनी गरीबी हमारी

रिपोर्टर :-सरिता. बातूनी रिपोर्टर :-विष्टी

ऐसे तो हमारे सड़क एवं कामकाजी बहुत मेहनती होते हैं और उनमें बहुत से गुण होते हैं जैसे धैर्य, संतोष और कुछ बनने का और कुछ कर दिखाने का जज्बा भी उनमे बखूभी होता है लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने की वजह से उन्हें यह सपना अधूरा सा लगता है उन्हें छोटी से छोटी चीज के लिये कठिन संघर्ष करना होता है। ऐसी ही कुछ कहानी है विष्टी कुमारी (परिवर्तित नाम) की जो 11 वर्ष की है एवं वर्तमान में बादशाहपुर गुरुग्राम में रहती है और उसका परिवार पलायन करके आया है मतलब मूल रूप से वह बंगाल की रहने वाली है। उसके माँ-बाप वहां रोजगार न होने के कारण पलायन करके यहां आ गए, माता-पिता रहने के लिए और बेहतर भविष्य एवं रोजगार के लिए परिवार समेत गुड़गांव आए हैं, विष्टी के घर में विष्टी के अलावा दो बहन और एक भाई है जो माता-पिता के साथ रहती है उसकी माता जी दूसरे के घरों में साफ-सफाई और खाना बनाने का काम करती है एवं उसके पिताजी हाउसकीपर का काम करते हैं, वैसे तो उनके घर में सभी मेहनती है लेकिन उनकी आर्थिक हालत बहुत खराब है। जैसे विष्टी अपने घर को संभालती है और दोनों बहन और एक भाई का ख्याल भी रखती है जिस वजह से विष्टी को पढ़ने लिखने और खेलने कूदने का समय नहीं मिलता है लेकिन विष्टी की पढ़ाई-लिखाई में बहुत दिलचस्पी है, वह चेतना एनजीओ के कार्यकर्ता से मिली तो उसने कहा कि मुझे भी पढ़ना है तो कार्यकर्ता ने उसका हौसला बढ़ाया और कहा कि आप पढ़ने आ सकते हैं तो वह भी वहां मन लगाकर पढ़ती है। विष्टी ने पढ़ते हुए बाल अधिकारों के बारे में जाना और आर्ट एंड क्राफ्ट सीखा और पढना और लिखना भी सीखा, जिसे देखकर हमारी चेतना एनजीओ के कार्यकर्ता बोलते हैं, कि तुम स्कूल क्यों नहीं जाना चाहती हो? तुम्हें स्कूल जाना चाहिए अर्थात शिक्षा हर एक बच्चे का अधिकार है और स्कूली शिक्षा बिना तो बचपन अधूरा है तो बिष्टी ने भी अपनी सारी समस्या कह डाली, उसने कहा कि घर के कामों से समय ही नहीं मिलता और बिष्टी कभी-कभी काम के लिए अपनी माताजी के साथ उनकी मदद करने कोठी में भी जाती है जिससे विष्टि को बहुत बुरा लगता है और शर्मिंदगी महसूस होती है लेकिन वह क्या करें मजबूरी है और अगल-बगल के लोग मित्र भी चिढाते हैं कि तुम दूसरे के जुठे बर्तन धोने जाती हो हम तुम्हारे साथ नहीं रहेंगे जिससे विष्टि को बहुत बुरा लगता है कि मुझे भी अपने माता-पिता के जैसे मेहनत मजदूरी करनी पड़ेगी। जिसे सोच कर बहुत दुखी होती है की उसे भी दूसरों के घरों में बर्तन धोने का झाड़ू-पोछे का काम करना पड़ेगा लेकिन विष्टि यह सब नहीं करना चाहती है वह तो बड़े होकर अध्यापक बनना चाहती है ताकि वह अपने भाई-बहनों को भी पढ़ा सके और भी गरीब बच्चों की मदद कर सके। विष्टी का यह सब बात सुनकर चेतना कार्यकर्ता को विष्टी से सहानभूति हो गई और उन्होंने बोला की तुम जरूर कामयाब होगी, हम तुम्हारा सहयोग और सहायता करेंगे स्कूल एडमिशन और पढ़ाई-लिखाई में भी लेकिन तुम्हें स्कूल पढ़ने जाना होगा, तभी तुम एक अच्छी अध्यापक बन सकती हो और अपना सपना पूरा कर सकती हो, तो विष्टि ने कहा हां दीदी मेरी बहन थोड़ी बड़ी हो जाएगी तो मैं अपनी माताजी से जिद करुंगी कि मुझे भी स्कूल पढ़ने भेजा करे जिससे मेरे सपने पुरे हो और पढ़ लिखकर मैं अध्यापक बन सकूं ,लेकिन न जाने कब मेरा स्कूल जाने का सपना पूरा होगा।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए सरदार नगीना सिंह जी और परिवार तथा अभिनव इमिग्रेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471